राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

॥ दोहा ॥

प्रथम करूं मैं बन्दना राधास्वामी के दरबार ।
जिन जीवन पर दया कर कीन्हा भौजल पार ॥

॥ चौपाई ॥

हूं मैं पतित नीच नाकारा । ता को ला चरनन में डारा ॥
ऐसे दीन दयाल सुवामी । कोटि २ तिन करूं प्रनामी ॥
जा के पाप से नर्क डरावें । ता को ले सतपुर पहुंचावें ॥
मेरे समरथ गुरु दातारा । मो से पापी लीन्ह सम्हारा ॥

(२) परम पुरुष पूरन धनी कुल मालिक राधास्वामी के अवतार महाराज स्वामी जी कि जिन्हों ने अति दया करके अपना कुल भेद परगट किया—कि जो राधास्वामी पन्थ के नाम से मशहूर है—क़ौम खत्री सेठ शहर आगरा मुहल्ला पन्नीगली में संवत् १८७५ भादों वदी अष्टमी के दिन वक़्त साढ़े बारह बजे रात के प्रघट हुए और अंगरेज़ी हिसाब से अगस्त का महीना सन् १८१८ ई० था महाराज शिवदयाल सिंह के नाम से मशहूर थे ।

(३) कोटि धन्यवाद है उस मुबारक रात को कि जिसमें परमपुरुष पूरनधनी हज़ूर स्वामी जी महाराज

के तिमरनाशक चरन इस संसार में गुमराह[*] जीवों के निमित्त सुशोभित यानी रौनक़ अफ़रोज़ हुए और कोटान कोटि धन्यबाद है उस मुल्क [और शहर और ख़ासकर उस मुहल्ले] को कि जिसको हज़ूर स्वामी जी महाराज ने इस भौसागर से पार करने का बन्दरगाह बनाया और शब्द रूपी जहाज़ जारी किया ।

(४) हज़ूर स्वामी जी महाराज के बचपन का ज़माना बालचरित्र में जैसा कि क़ायदा है सर्फ़ हुआ और पाँच बर्ष की उमर के बाद जब कुछ होश आना शुरू हुआ तो महाराज तहसील इल्म और ऊँचे दरजे की परमार्थी कारवाई में बड़े शौक़ के साथ मशग़ूल हुए । जब महाराज की उम्र छः बर्ष की थी, तो अलस्सबाह[†] उनकी माताजी महाराज आपको स्नान कराके वास्ते इबादत[‡] के तैयार कर दिया करती थीं तब उसी वक्त से महाराज अपनी परमार्थी कारवाई में लग जाते थे । इस अर्से में कुछ शग़ल तहसील इल्म का भी जारी था । पढ़ने में महाराज का यह हाल था, कि यह नहीं

*भूले हुए । †प्रातः काल । ‡भजन ।

मालूम होता था कि महाराज अज़ सरे नौ* पढ़ते हैं याकि अमोख़्ता† दोहराते हैं।

(५) महाराज ने जिस जानिब‡ को तवज्जह फ़रमाई कमालियत§ हासिल की। महाराज ने पेश्तर अलावः हिन्दी यानी नागरी और गुरुमुखी के पढ़ना फ़ारसी का शुरू किया, और उसको इन्तिहा‖ दरजे तक पहुंचाया यानी इल्म फ़ारसी में जिसका रिवाज उस ज़माने में ज़्यादा था कमालियत हासिल की। और एक रिसालः¶ भी अपनी ज़बान मुबारक से फ़ारसी में तसनीफ़** फ़रमाया था, जिसके मज़मून की बुलंदी और आला†† दरजः के ख़ियालात का इज़हार‡‡ और इबारत आराई अज़बस§§ थी और सिवाय आलिम फ़ाज़िल‖‖ के हर एक की ताक़त न थी कि उसके मानी और मतालिब को समझ सके।

(६) महाराज संस्कृत और अरबी भी जानते थे, और लोगों को परमार्थी उपदेश करने और समझाने बुझाने में बड़ी तवज्जह फ़रमाते थे, क्योंकि दुनिया के भूले हुए जीवों को समझाने की ग़रज़ से औतार धारन करके यहाँ आये थे, और असली पर-

*नये सिरे से। †सीखा हुआ। ‡तरफ़। §पूरा काम किया। ‖अख़ीर। ¶किताब। **बनाई। ††ऊँचे। ‡‡ज़ाहिर करना। §§बहुत। ‖‖विद्यावान।

मारथ इस उम्दा तौर से समझाया करते थे, कि वे शख़्स मानिन्द तसवीर के वेहिस्स व हरकत हो जाया करते थे, और महाराज के बचन उनके दिल में नक़्श हो जाते थे, और फिर वे महाराज में पूरी सरधा ले आया करते थे। इस पर शहर के लाेग कहा करते थे कि वहाँ पर ताे कुछ जादू है, कि जो उन के सामने जाता है वह उन की सी कहने लग ज़ाता है।

(७) महाराज के पास अक्सर खत्री ब्राह्मण और बनियों के लड़के फ़ारसी पढ़ने की ग़रज़ से आया करते थे, और उनको यह विद्या दान मुफ़्त में दिया जाता था। और जिन लोगों ने महाराज से पढ़ा बहुत फ़ैज़याब हुए। जो कोई महाराज के सन्मुख आता और किसी तरह की दरख़्वास्त वास्ते अपने मतलब के करता, तो जब तक उस का काम पूरा न हो जाता, तब तक महाराज को चैन नहीं पड़ता था, जब उस की मतलब बरारी हो जाती तब शान्ती होती थी। कोई ग़रीब या ग़रज़मंद आदमी हो उसको अगर महाराज से इत्तिफ़ाक मिलने का हाे जाता था, तो आप बहुत प्रीति से

पेश आते थे और उस के काम में अति दया फ़र्माते थे और वह बहुत खुश होकर जाता था।

(८) महाराज के पिता जी लाला दिलवाली सिंह जी अव्वल में गुरु नानक साहब की टेक रखते थे, और उनकी बानी का पाठ बड़ी प्रीति और प्रतीत से किया करते थे। जपजी, सोदर, रौरास और सुखमनी का पाठ रोज़मर्रः नेम से करते थे, जैसा कि महाराज स्वामी जी के दादा साहब के वक़्त से चला आता था, कि जिन के हाथ की पोथी सुखमनी जी फ़ारसी में लिखी हुई अब तक मौजूद है।

(९) फिर महाराज के पिताजी साहब को महाराज तुलसी साहब का कि जो पूरे संत थे और हाथरस में प्रगट हुए थे और अक्सर आगरे में भी तशरीफ़ लाया करते थे सतसंग प्राप्त हुआ, और उनकी वजह से संतमत की पुष्टता और मज़बूती खूब हुई, और बड़े प्रेम से साध सेवा और सतसंग उनके रूबरू उनकी उमर भर जारी रहा।

(१०) सिवाय पिताजी महाराज के माताजी महाराज व बुआ साहबः व नानी साहबः को भी महाराज तुलसी साहिब का सतसंग बहुत अर्से तक प्राप्त होता रहा, इस वजह से इन सब साहबों

को संतमत की महिमा और प्रतीत, और सुरत शब्द मारग की क़दर ज़िहननशीन हो गई थी, मगर कई एक को भेद से वाक़फ़ियत पूरी २ नहीं हुई थी। तो महाराज स्वामीजी दयाल ने दया करके, सब भेद कुल मंज़िलों का और दीगर राज़ पिनहानी* जो कुछ थे, सब खूब अच्छी तरह से समझा दिये थे और शाम के वक़्त कुछ थोड़ी देर सतसंग के वक़्त बहुत कुछ बयान फ़रमाया करते थे, कि जिससे हर तरह की तसल्ली व दृढ़ता हो गई थी। और महा माताजी व नानी साहबः व बुआ साहबः महाराज के साथ संसारी नाते से हरगिज़ बरताव नहीं करती थीं, बल्कि गुरु भाव से बरतती थीं। क्योंकि महाराज तुलसी साहब ने एक बार खुद ज़बान मुबारक से महाराज की वालदः† साहबः से यह लफ़्ज़ फ़रमाये थे कि महारानी जी तुम इन को यानी स्वामीजी महाराज को पुत्र भाव करके मत समझना यह कोई परम संत ने तुम्हारे यहाँ आनकर औतार लिया है उस वक़्त से महा माताजी महाराज वग़ैरह बड़े भाव और अदब और प्रीति से बरताव करती थीं।

---

* भेद छिपे हुए। † माताजी।

(११) चूंकि हज़ूर परम पुरुष पूरनधनी स्वामीजी महाराज परम संत थे और दर्जात फ़क़ीरी में परम संत का दर्जा सब से आला है यहाँ पर लफ़्ज़ संत के असली मानी जो कि अवाम के ख़्याल में एक मामूली भेष धारी के हैं ज़ाहिर करना बहुत ज़रूर है। संत उनको कहते हैं कि जिनकी रूह अलावः पिंड व ब्रह्मांड के तीन स्थानों के पार होकर चौथे से चढ़ती हुई सत्तलोक में पहुंचती हो जो कि दयाल देश भी कहलाता है और काल की हद से बाहर है। उसके आगे दो मुक़ाम छोड़कर अनामी यानी राधास्वामी पद है, और अख़ीरी तीसरा दर्जा सत्तलोक से सब के ऊपर यही है, जो सहसदलकँवल से आठवाँ दर्जा है, और यही हज़ूर स्वामीजी महाराज का निज देस और तख़्तगाह है।

(१२) हज़ूर स्वामीजी महाराज की महिमा कहाँ तक की जावे, बस इतनी ही काफ़ी है कि कुल मालिक अनामी पुरुष आप जीवों के उद्धार के निमित्त इस संसार में आन कर प्रघट हुए और जब देखा कि अवामुन्नास* में से, उनके निज भेद को जानने वाला कोई संसार में नहीं है, और

* आम लोग।

सच्चे मालिक को छोड़कर लोग पानी पत्थर मूरत मंदिर में भटकते फिरते हैं, और मालिक का निज भेद कोई नहीं दे सक्ता है तब मालिक कुल को मुनासिब मालूम हुआ, कि वह खुद मनुष्य देह धारकर इस संसार में आवे, और अपना भेद अधिकारी जीवों को खुद बख़्शे। इस वजह से महाराज ने आप प्रघट होकर अपना भेद इस संसार में ज़ाहिर किया।

(१३) जब महाराज मदरसे ही में थे उसी वक़्त से अपने वाल्दैन और दीगर घर वालों और मुलाक़ातियों को, और उन साधुओं और फ़क़ीरों को जो आप के पास आते या जिनसे इत्तफ़ाक़ मिलने का होता, ऊँचे से ऊँचे दर्जे के परमार्थ का उपदेश फ़रमाते थे और उस किशोर अवस्थाही में इस संसार की नाशमानता का भली प्रकार बयान करके, लोगों के दिलों पर असर डालते थे, जैसा कि आप ने अपने ग्रन्थ में तहरीर* फ़रमाया है।

यह तन दुर्लभ तुमने पाया। कोटि जनम भटका जब खाया॥
अब याको बिरथा मत खोओ। चेतो छिन छिन भक्ति कमाओ॥

इस बात को खूब समझा २ कर लोगों को चेताते थे, कि इस दुनियाँ में बड़ा भारी जाल पड़ा हुआ

* लिखा है।

है। और जीव जब से अपने आदि धाम से उतर कर नीचे आया है, यहाँ चारो खानों और चौरासी लाख जोनों में घूमता फिरता है, और नर्क वग़ैरह के वड़े २ दुःख और कलेश सहता है, और लौट कर अपने घर जाने के रास्ते से बिलकुल बेख़बर हो गया। यह रास्ता और इस के ऊपर चलने की जुगत इसको सिर्फ़ नरदेही में मिल सकती है, किसी जोन में हरगिज़ नहीं मिल सक्ती। इसी वास्ते हुकमाय मुतक़द्दमीन* ने इन्सान† को अशरफुलमख़लूक़ात‡ कहा है। और फ़रमाते थे कि ऐसी दुर्लभ नरदेही को सुफल करना चाहिये, और वह सुफल करना यह है, कि दुनिया के कामों से मामूली तौर पर फ़ुरसत हासिल करके, मालिक कुल की वन्दगी और इबादत में लगा रहे, और अगर मुमकिन हो तो एक लमहा§ भी अपना बरबाद न करे जैसा कि कबीर साहब ने भी फ़रमाया है––

॥ दोहा ॥

कबीर सोता क्या करे, जागन की कर चौंप॥
यह दम हीरा लाल है, गिन २ गुरु को सौंप॥

(१४) महाराज ऐसी ऐसी बातें जब उस किशोर

*पहिले महातमाओं ने। †मनुष्य। ‡सब से उत्तम। §पल।

अवस्था में बड़े बड़े बुज़ुर्गों को समझाते थे तो देखने वालों को बहुत तअज्जुब होता था कि यह कौन हैं और क्या होने वाले हैं। जब वे लोग महाराज को शीरीं और भोली ज़बान से ऐसे आला दर्जे के बचन संजीदगी से फ़रमाते हुए सुनते थे तो अपने दिल ही दिल में मुतहइयर* हो जाते थे।

(१५) हज़ूर राधास्वामी साहब की शादी फ़रीदाबाद ज़िला दिहली में लाला इज़्ज़तराय साहब के यहाँ हुई थी, उनके पोते लाला बलवंतसिंह साहब वकील राज जोधपुर पर कि जो महाराज के चरनों में बहुत प्रीति और सरधा रखते थे, स्वामी जी महाराज बड़ी दया किया करते थे, और उन्होंने एक दो किताब फ़ारसी की कि जिनका पढ़ानेवाला उनको कोई फ़रीदाबाद में नहीं मिला था, स्वामी जी महाराज से ख़ूब समझ कर पढ़ी थीं कि जिसकी वजह से उनके इल्म की क़दर बहुत होगई थी।

(१६) बादहू जब महाराज की शादी होगई और राधाजी महाराज आगरे में आईं तो उनको

*हैरान।

भी स्वामी जी महाराज ऊँचे दर्जे के परमारथ की समझौती दिया करते थे, और सतसंग के वक़्त परमार्थी वचन सुनाया करते थे, कि जिसकी वजह से राधाजी महाराज को शौक़ नागरी पढ़ने का पैदा हुआ, और फिर वे अक्सर पोथियों का पाठ ख़ुद भी किया करती थीं। और जो कुछ उनको पाठ के वक़्त पूछना होता था तो अपनी सास साहबः या स्वामी जी महाराज से दरयाफ़्त करती रहती थीं।

उन पर वचनों का यहाँ तक असर होगया था कि उन्होंने अपना कुल ज़ेवर कि जो क़ीमत में हज़ारों रुपये का होगा स्वामी जी महाराज के हाथ से सब साध सेवा में ख़र्च करा दिया और जो कोई औरत ग़रीब मुहताज या कोई साधू या गृहस्ती जिस किसी को राधाजी महाराज के दर्शनों का इत्तिफ़ाक़ होगया और उसने अपनी तकलीफ़ का हाल बयान किया तो उसके साथ खाने पीने और कपड़े वग़ैरह से फ़य्याज़ी* के साथ सलूक करती थीं। और आप को खाना पकाकर खिलाने का तो ऐसा शौक़ था कि चालीस २ पचास २ साधुओं

*उदारता।

का खाना तनहा तैयार करके रोज़मर्रा खिलाती थीं, और खाना मौजूद: साधुओं को खिला चुकने के बाद, अगर पाँच सात साधू पीछे से आजाते, तो उसी वक्त तैयार करके उनको भी खाना खिला देती थीं, यहाँ तक कि सुबह छ: बजे से शाम के चार पाँच बजे तक तो रोज़ही खाना पकाने और खिलाने में मशगूल रहती थीं और कई बार रसोइये रक्खे गये मगर किसी से पूरा काम न होसका।

(१७) जैसा कि राधाजी महाराज को खाना देने का शौक़ था ऐसाही रुपया पैसा देने का भी शौक़ था, कि एक बटुवा आप अपने पास रक्खा करती थीं, उसमें रुपये अठन्नी चवन्नी दुअन्नी पैसे हमेशा पास रक्खा करती थीं, और जो जिस को मुनासिब ख्याल फ़रमातीं दिया करती थीं।

(१८) राधाजी महाराज देहान्त होने के पेश्तर आगरे से झाँसी चली गई थीं, और जाने के पहले यह फ़रमाया था, कि झाँसीही में देहान्त होगा। अख़ीर वक्त उनसे पूछा गया कि आप की समाधि कहाँ बनेगी, तो फ़रमाया कि स्वामीजी महाराज की समाधि के साथही बनेगी। राधाजी

महाराज का देहान्त कातिक सुदी चौथ संवत १९५१ मुताबिक़ पहिली नवंबर सन् १८९४ ई० को हुआ था।

(१९) जब स्वामीजी साहब तहसील इल्म क़रीब क़रीब ख़तम कर चुके थे, उस वक़्त किसी हाकिम को ज़रूरत एक फ़ारसीख़्वाँ की हुई, तो उन्होंने महाराज को मदर्से ही में से शहर बाँदा में बुलाया था तब महाराज वहाँ तशरीफ़ ले गये मगर वहाँ पर चंद अर्से नौकरी करके महाराज ने हाकिम से बयान किया कि इस नौकरी में हमारा भजन बंदगी यानी इबादत का काम नहीं हो सक्ता है, लिहाज़ा हम नौकरी से दस्तबर्दार होते हैं। इस तरह पर वहाँ से वापस आगरे तशरीफ़ लाये, और अपनी इबादत में मशग़ूल रहने लगे। मगर पिताजी महाराज की यह ख़्वाहिश रही कि महाराज कुछ रोज़गार करें तो उन्होंने महाराज के ख़ुसुर लाला इज़्ज़तराय साहब को तहरीर फ़रमाया कि वे महाराज को फ़रीदाबाद तलब करें, और समझा बुझाकर कोई सिलसिला नौकरी का करावें। चुनाँचि ख़ुसुर साहब ने महाराज को बुलवाया, और नौकरी के बारे में कहा, तो महाराज ने फ़रमाया कि हम अपने

परमार्थ का हर्ज नहीं कर सक्के, अलबत्ता अगर ऐसी नौकरी हो जिस में सिर्फ़ घंटे दो घंटे का काम हो, तो मुमकिन है कि कर सकें।

महाराज की मौज की ही देर थी कि उसी अय्याम* में एक अतालीक़† की ज़रूरत वास्ते पढ़ाने राजा वल्लभगढ़ के हुई और महाराज के खुसुर साहब ने बयान किया कि जैसी नौकरी आप मंज़ूर करना चाहते थे उसी क़िस्म की नौकरी है, आप उसको मंज़ूर करें तो बिहतर है। उनकी दरख़्वास्त को क़बूल करके कुछ अर्से तक वह नौकरी की।

(२०) रजवाड़ों की नौकरी में यह क़ायदा था कि अलावा तनख़्वाह सवारी व नौकरान के पेटिया यानी सामान ख़ुराक कुल का मिला करता था। चुनांचि महाराज के यहाँ जो सामान आता था सो ग़रीब मुहताजों को दे दिया जाता था तो और अहलकार लोग आपकी दरिया दिली को देखकर बहुत तअज्जुब करते थे कि सब चीज़ें मालिक की राह पर तक़सीम कर देते हैं क्योंकि वे लोग जब सामान ज़्यादा जमा हो जाता था तो उसकी क़ीमत लिया करते थे, मगर महाराज सिवाय निहायत

* दिनों। † पढ़ाने वाले।

ज़रूरी चीज़ के कुछ पास नहीं रखते थे। और जो कोई महाराज के पास आता था, वह उस दर से महरूम होकर नहीं जाता था, उसको जिस तरह हो सक्ता था राज़ी और खुश करके रवाना करते थे, और यह तो एक ज़रासी बात थी, ऐसे सैकड़ों मार्के* अक्सर होते रहते थे।

(२१) मालूम होवे कि यह नौकरी महाराज ने सिर्फ़ पिताजी महाराज की मर्ज़ी पूरी करने के लिये की थी।

(२२) महाराज अंतरजामी थे और यह खूब जानते थे कि उनके पिताजी महाराज का देहान्त फ़लाँ माह में फ़लाँ रोज़ होगा। जब यह दिन क़रीब आया तो महाराज नौकरी से मुस्तैाफ़ी होकर इन्तिक़ाल के सिर्फ़ एक रोज़ पेश्तर आगरे में तशरीफ़ ले आये, और दूसरे रोज़ पिताजी महाराज भी जो कि शादी में शिकोहाबाद गये थे और वहाँ पर बीमार हो गये थे वापस आगरे आये। वही अख़ीर दिन था उस वक़्त महाराज ने ऐसी ख़िदमत पिताजी महाराज की करी कि जैसी लाज़िम और मुनासिब होती है, और रात भर उन की सुरत की सम्हाल करते रहे, और बानी का पाठ करके खुद सुनाते रहे,

* मौक़े।

कि जिस से सुरत नाम में लगी रहे, और नाम का आनन्द लेती रहे। इस अर्से में पिताजी महा-राज ने अपनी निहायत दर्जे की रज़ामंदी कई बार ज़ाहिर की, और अख़ीर को महाराज ने उन की सुरत को सत्तलोक में पहुंचाया।

(२३) हुज़ूर स्वामीजी साहब के पिताजी व दादा जी साहिबान सब फ़ारसीख़्वाँ और नौकरी पेशा थे, तो जब पिताजी महाराज के अय्याम ज़ईफ़ी के आये तो पिताजी महाराज ने परदेस की नौकरी तर्क करके खानह नशीनी अख़्तियार की, और परमार्थ की कमाई की तरक्क़ी करने में दिल को ज्यादा लगाना शुरू किया। और चूंकि इस के साथ में कुछ फ़िक्र मआश भी ज़रूर था, लिहाज़ा उन्हों ने कुछ सिलसिला दादो सितद* का भी जारी किया, और वही सिलसिला बाद उनके इन्तिक़ाल के कुछ रोज़ और भी जारी रहा, कि इस अर्से में महाराज स्वामीजी के बिचले भाई यानी उनसे छोटे महाराज बिंद्राबनदास जी उर्फ़ सरकार दफ़्तर में पोस्टमास्टर जनरल के मुलाज़िम हो गये तब स्वामीजी महाराज ने इस गुलाम को

*लेन देन।

कि जो सब से छोटा यानी तीसरा भाई संसारी रिश्ते में होता है हुक्म दिया, कि ए अज़ीज़ चूंकि क़ादिर हक़ीक़ी* ने अब रिज़्क़ की सूरत दूसरी निकाल दी है, तो अब लेन देन करना और सूद के रुपये से ख़र्च अयालदारी† का चलाना नामुना-सिब मालूम होता है। लिहाज़ा तुम सब क़र्ज़दारों के कागज़ात इस्टाम्प वग़ैरह के निकाल लो, और उन सब लोगों को बुलाकर यह बयान कर दो कि स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया है कि अगर तुम को हमारा रुपया देना मंजूर है और अपना ईमान सलामत रखना चाहते हो, तो हमारा रुपया एक हफ़्ते के अर्से में अदा कर दो, वर्नः तुम्हारे दस्ता-वेज़ात सब चाक करके फेंक दिये जावेंगे।

(२४) चुनांचि एक हफ़्ते बाद मैं ने यानी प्रताप-सिंह ने वही तामील स्वामीजी महाराज के हुक्म की करनी शुरू की कि हर रोज़ चार पाँच क़र्ज़दारों को तलब किया और उनसे रुपया माँगा, और जब उन्हों ने बयान किया, कि अभी तो हमारे पास रुपया देने को नहीं है, उसी वक़्त उनके रूबरू दस्ता-वेज़ात निकालीं और चाक करके फेंकदीं, और सूद की

* मालिक। † कुटम्ब।

आमदनी एक दम क़तई बंद कर दी। लोगों से लेना सूद के रुपये को बुरा सब महातमाओं ने कहा है, और मुसलमानों के मज़हब में भी सूद को बुरा समझते हैं, और कबीर साहब ने भी फ़रमाया है।

॥ दोहा ॥

जुवा चोरी मुखबिरी ब्याज घूस पर नार।
जो चाहे दीदार को एती बस्तु निवार॥

जब दादोसितद का सब काम मौकूफ़ कर दिया, तो कारोबार दुनियवी राय बिंद्रावन साहब की आमदनी से बखूबी चलता रहा।

(२५) राय बिन्द्राबन साहब पेश्तर चालीस रुपये के मुलाज़िम हुए थे, यह साहब भी अव्वल दरजे के परमार्थी थे, और फ़क़ीर रसीदः हुए हैं, और पंथ बिन्द्राबनी जो आजकल जारी है और अवध वग़ैरह में फैला हुआ है वह आपही ने जारी किया था, पुस्तक बिहार बिन्द्राबन व समर बिहार बिन्द्राबन आपही ने तसनीफ़* की हैं और हज़ारहा रुपये अव्वल दरजे के परमार्थ में उमर भर सर्फ़ किये, यानी तन मन धन से हज़ूर स्वामी जी महाराज की ख़िदमत गुज़ारी व फ़रमाँबरदारी

* बनाई।

करते रहे यहाँ तक कि आप पहरने के कपड़े भी बग़ैर हुक्म महाराज के नहीं बनवाते थे। और साध सेवा भी हमेशा आला दर्जे की करते रहे, और चन्द शहरों में जहाँ जहाँ पर आप की बद-ली ऐयाम मुलाज़िमत* में होती रही स्कूल और मुहताजख़ाने जारी किये, और अक्सर जगह हुक्काम भी मुआविन व मददगार होते रहे और उन्हों ने भी स्कूल और अपाहिज ख़ानों को ज्यादः रौनक़ बख़्शी। चुनांचि दो शहरों में तो उनकी बुनियाद डाली हुई अब तक क़ायम है, एक तो अजमेर में कि जहाँ पर आप चार पाँच बर्स पोस्टमास्टर रहे थे एक स्कूल जारी किया था और जनाब मिस्टर डिक्सन साहब बहादुर सुपरिन्टेन्डेंट ने स्कूल का मुलाहिज़ा करके तालिब इल्मों को इनाम तक़सीम किये, और उसी वक़्त में साहब बहादुर ने सरकारी मदरसे के वास्ते गवरमेंट को रिपोर्ट की, और वही स्कूल गवरमेंट कालिज की सूरत में मौजूद और अब तक जारी है। और नीज़ सुपरिन्टेन्डेंट साहब ममदूह ने राय बिन्द्राबन साहब की तरक्क़ी के वास्ते बहुत ज़ोर देकर जनाब रिडल साहब बहादुर पोस्ट-

*नौकरी।

मास्टर जनरैल को तहरीर किया, और उनके लिखने पर फ़ौरन सत्तर रुपये से सौ रुपये माहवारी पर पोस्टमास्टर फ़तहगढ़ मुक़र्रर हुए। और इसी तरह पर तरक़्क़ी होते होते बतनख़्वाह पाँच सौ रुपया अलावा भत्ते के सुपरिन्टेन्डेंट कुल सूबा अवध के हुए और फिर ख़ास फ़ैज़ाबाद में अपाहिज ख़ाने की बुनियाद डाली जो अब तक मौजूद है और सन् १८७७ के दिहली दरबार से वसबब ऐसी ख़ैरातें करने के एक सनद भी सरकार से मिली थी। जब शुरू में महाराज बिन्द्राबनदास जी चालीस रुपये के मुलाज़िम हुए थे जैसा कि ऊपर ज़िकर हो चुका है, तब कुल अयालदारी का ख़र्च उन्हीं की तनख़्वाह से चलने लगा। और स्वामीजी महाराज अभ्यास के आनन्द में बेफ़िक्री से मसरूफ़ हुए और राधास्वामी मत का प्रकाश करना शुरू किया।

(२६) राधास्वामी मत को संत मत भी कहते हैं और इस में सुरत शब्द योग का अभ्यास कराया जाता है। मालिक शब्द स्वरूप है और शब्द ही से कुल रचना हुई है और शब्द के ज़रीए से ही यह सुरत उतर कर आई है, और शब्द के ही

ज़रीए से चढ़ेगी। इस वास्ते संतों ने यह सब से सीधा और सहज मारग जीव के उद्धार का जारी फ़रमाया है। इस मत में सुरत को शब्द का लखाव कराया जाता है, यानी शुरू ही में जीव के हाथ में मालिक का दामन पकड़ा दिया जाता है, यह इस मत की एक बड़ी भारी खूबी है।

(२७) पेश्तर जो संत हुए उन्हों ने इस अभ्यास के साथ फिर भी इतना रक्खा था कि जब आदमी घर बार छोड़ कर विरक्त हो जावे, तब उसको उपदेश देते थे, और सुरत शब्द योग प्राणायाम के ज़रीए से कराते थे, जो कि बहुत मुशकिल और ख़तरनाक अभ्यास है और संजम भी उसके बहुत मुशकिल हैं कि जो गृहस्ती से तो बिलकुल नहीं बन सकते इसलिये बहुत कम जीव फ़ायदा उठा सके। अब राधास्वामी दयाल ने जीवों पर ऐसी दया फ़रमाई कि गृहस्तियों को भी उपदेश फ़रमाया और प्राणायाम को बिल्कुल मौक़ूफ़ कर दिया, और जुक्ती अभ्यास की इस क़दर सहज कर दी, कि जिस को मर्द और औरत और लड़के और बूढ़े सब कर सक्ते हैं, और घर बार और रोज़गार छोड़ने की कोई ज़रूरत नहीं

है। अभ्यासी जीते जी इस अभ्यास का फ़ायदा और अपने उद्धार का सबूत अपनी आँखों से देख सक्ता है।

(२८) राधास्वामी दयाल ने अनुराग और प्रेम पर ज़्यादा ज़ोर दिया है, और फ़रमाया है कि इस के बग़ैर दुनिया के भी काम अंजाम को नहीं पहुंचते, फिर यह तो परमार्थी काम है। मालिक प्रेम स्वरूप है और जीव का भी प्रेमही स्वरूप है, सिर्फ़ फ़र्क़ इतना है कि मालिक प्रेम का सोत पोत और सिंध है, और यह जीव प्रेम की एक बूंद है, मगर माया का परदा दरमियान मालिक और जीव के हायल हो गया है। यह परदा दूर होने पर बूंद अपने सिंध में पहुंच जावेगी। सो यह परदा बग़ैर सतगुरु, शौक़, प्रेम और अभ्यास के नहीं दूर हो सक्ता है।

(२९) स्वामी जी महाराज जिस वक़्त अक्सर प्रेमियों को उपदेश देते थे, तो उसी वक़्त बाज़े २ अधिकारियों की सुरत किसी क़दर अपने बल से चढ़ा कर उनको ऊपर के लोक का आनन्द दरसा देते थे और कुछ लोग कि जिन पर ऐसी दया की गई थी अभी तक मैाजूद हैं इस से उपदेशी

को फ़ौरन प्रतीत आजाती थी, ज़यादा ऊँचा एक दम न चढ़ाने की वजह यह थी कि यह जीव गहरे आनन्द को एक बारगी बरदाश्त नहीं कर सक्ता है ।

(३०) एक मरतबे का ज़िक्र है कि एक औरत तख़्त बाई पंजाबन चौधवें की रहनेवाली थी जो महाराज की चेलियों में से थी और बहिन करके मशहूर थी और महाराज ही के मकान पर रहा करती थी। एक मरतबे उसके चंद रिश्तेदार मथुरा बिन्द्राबन के मेले को आये मेला और यात्रा करने के बाद वह आगरे में भी आये, और उस औरत से मिले और कहा कि तू यहाँ किस लिये पड़ी है, तुझे अभी तक यहाँ क्या लाभ हुआ और तीर्थ वग़ैरह क्यों नहीं करती । यह सब हाल उसने महाराज से बयान किया और कहा कि मुझ को कुछ अंतर का आनंद बख़्शिये और सुरत को चढ़ाइये, तब महाराज ने यह सोच कर कि इसकी प्रतीत में कमी न हो जाय, उसको हुक्म दिया कि हमारे सामने भजन में बैठ, और फिर उसकी सुरत को अपने बल से महाराज ने चढ़ाया और कुछ ज़्यादा खैंच दिया इस पर वह चिल्लाने लगी, कि महाराज

जान निकली जाती है, जो चीज़ बख़्शी है लेलो मुझ से नहीं बरदाश्त होती और बार बार यह कह कर बेहोश हो गई—फिर दो रोज़ तक बेहोश रही तब महाराज ने उसकी सुरत को उतारा फिर भी कुछ अर्से तक दिल धड़कता रहा और घबराहट रही। यह सारा हाल उसने अपने रिश्तेदारों को सुनाया फिर उन सब लोगों को भी यक़ीन हुआ और सब ने महाराज से उपदेश लिया।

(३१) चूंकि अनामी पुरुष या मालिक कुल में सर्व शक्ती और ताक़त है और कुल का भंडार है और उसकी क़ुदरत से रचना का सब काम चल रहा है और जो परम संत वहाँ से आते हैं वे भी वही ताक़त और समरत्थता लेकर आते हैं तो उनमें और अनामी पुरुष में कुछ ज़री भर भी फ़र्क़ नहीं होता है तो जब इस संसार में जीवों के उपकार के वास्ते अनामी पुरुष या परम संत आनकर प्रघट होते हैं तो उनसे बड़ा संसार में कोई नहीं होता है तो वे किसी को गुरू नहीं बना सक्ते हैं इसी वजह से हज़ूर स्वामीजी महाराज का कोई गुरू नहीं था और न किसी से उन्हों ने परमार्थ का उपदेश लिया बल्कि आपही अपने वालिदैन को और जो साधू कि उनकी पहचान

वाले मकान पर आते थे उनको हर तरह से पर-
मारथ के समझाने में कोशिश करते रहे। हज़ूर
स्वामीजी साहब रात दिन एक अलहदा कोठे में जो
अन्दरून दूसरे कोठे के था क़रीब पन्द्रह बरस के
आनन्द अभ्यास सुरत शब्द योग का लेते रहे और
अपने निजधाम के रस में मगन रहते थे यहाँ तक
कि अक्सर औक़ात दो २ तीन २ रोज़ तक बाहर नहीं
निकलते थे और न इस अरसे में हाजात ज़रूरी की
तरफ़ तवज्जह होती थी सुरत बराबर चढ़ी रहती
थी और महाराज अनामी धाम में समाये रहते थे।
और वाज़ह हो कि स्वामीजी महाराज का बदन
इकहरा यानी सूक्ष्म था मगर जिस वक़्त कि आप
वचन फ़रमाया करते थे तो आठ २ दस २ घंटे
तक शेर की तरह से दहाड़ा करते थे और लोग
तअज्जुब करते थे कि यह ताक़त कहाँ से आती है
जो इतनी देर तक बराबर बचन फ़रमाते रहते हैं
बावजूदे कि महाराज की खुराक वज़न में बहुत
कम थी यहाँ तक कि क़रीब बीस बरस के देखने
में आया कि सिर्फ़ एक छटाँक का अहार था।

(३२) यह जुक्ती कि जो हज़ूर राधास्वामीजी
महाराज ने अब जारी फ़रमाई है किसी ने पिछले

वक्तों में इस आसानी के साथ नहीं जारी की और यही सबब है कि अंतरमुख अभ्यास सब मतों में जो आजकल दुनिया में जारी हैं गुप्त और पोशीदा हो गया और सब मतों के लोग बाहर-मुखी पूजा और धरम और करम में लग गये और सच्चे मालिक की पहिचान और उस से मिलने की जुगत और उस के रास्ते और मंज़िलों के भेद से नावाक़िफ़ रह गये।

(३३) राधास्वामी मत में चार चीज़ें दरकार हैं अनुराग, गुरू पूरा, सतसंग और भेद नाम का और यही चार चीज़ें वसीले उद्धार यानी नजात के हैं। गुरू पूरा और सच्चा यानी सतगुरु चाहिये वंसावली गुरुओं से काम नहीं निकल सक्ता। नाम भी सब से ऊँचा और सच्चा और पूरा और असली यानी ज़ाती चाहिये मय भेद नामी यानी मुसम्मा के—कृत्रम यानी सिफ़ाती नामों से काम नहीं बनेगा। सतसंग भी सच्चा चाहिये, और उसकी दो क़िस्में हैं, एक सतसंग अंतरी और दूसरा बाहरी। अन्तरी सतसंग यह है कि अभ्यासी अपनी सुरत यानी जीवात्मा यानी रूह को अन्तर में चढ़ाकर सत्त पुरुष राधास्वामी के चरनों में लगावे, या उस

तरफ़ को मुतवज्जह करे। और दूसरा यह कि जब इसको दर्शन और संग सत्तपुरुष के कि जिसके औतार सच्चे और पूरे संत और साध हैं नसीब होवें, तब यह उनके बचन सुने और दर्शन करे और जो सेवा बन सके करे। इन दोनों क़िस्म के सतसंग से कोई दिनों में हालत बदलती हुई साफ़ मालूम होगी।

(३४) जो और काम परमार्थी क़िस्म के हैं मिसल तीरथ और बरत और मंदिर और मूरत और पोथियों का पाठ और जप और सुमिरन सिफ़ाती नाम का, इन कामों के करने से कुछ फल मिल जावेगा मगर हालत नहीं बदलेगी। क्योंकि इन कामों में निज मन और जीवात्मा यानी रूह जिसको संत सुरत कहते हैं पूरे २ शामिल नहीं होते हैं, और इसी सबब से इन कामों का असर ज़ाहिर नहीं होता, अलबत्ता ज़ाहिरी आनन्द और अहंकार वग़ैरह दिल में आजाता है।

(३५) सुरत यानी जीवात्मा या रूह जो ख़ास सत्तपुरुष राधास्वामी की अंस है, इस देह में एक बड़ा जौहर है, कि जिसकी ताक़त से कुल बदन और मन और इन्द्रियाँ वग़ैरह अपना २ काम देती हैं

सो संतों ने इसी जौहर को छाँट कर उसके असल भंडार और ख़ज़ाने की तरफ़ मुतवज्जह किया है, और जब इसकी सच्ची तवज्जह उधर को हुई तब आहिस्ता २ इसकी हालत भी बदलती जाती है, और दुनियाँ और उसके पदार्थ रोज़ बरोज़ नज़र में ओछे और हक़ीर दिखलाई देते हैं। इस जौहर लतीफ़ का असल मुक़ाम और क़याम यानी ठहराव पिंड यानी जिस्म में आँखों के पीछे है, और वहाँ से यह तमाम देह में फैला है, और सब आज़ाओं को ताक़त दे रहा है और उसका भंडार और ख़ज़ाना आदि शब्द यानी आदि नाद है।

(३६) मालूम होवे कि आदि शब्द कुल का करता और स्वामी है, और आदि सुरत यानी उसके अव्वल ज़हूर का नाम राधा है, इन्हीं का नाम शब्द और सुरत है। और जब इनकी धार नीचे आई तब इसी आदि शब्द से और शब्द, और आदि सुरत से और सुरत हुईं, और शब्द से सुरत और सुरत से शब्द बराबर परघट होते आये, और अपने २ मुक़ाम पर क़ायम हुए।

(३७) शब्द की महिमा हर एक मत में है मगर शब्द का भेद मुशर्रह* किसी मत के ग्रंथ या

* तफ़सील वार।

पोथियों में नहीं लिखा है, इसी सबब से लोग इस से नावाक़िफ़ रह गये। अब राधास्वामी मत में तफ़सील शब्दों की और उनका भेद और बुज़ुर्गी का हाल खोल कर साफ़ साफ़ बानी में लिखा है। खुलासा भेद शब्द का नीचे लिखा जाता है।

(३८) कुल की आदि राधास्वामी यानी कुल मालिक हैं, यहाँ शब्द निहायत गुप्त है, और उसका नमूना इस रचना में कहीं नहीं है इसी शब्द से सत्तपुर्ष प्रघट हुए।

(३९) शब्द पहला सत्तपुरुष का शब्द, जिस को सत्तनाम और सत्त शब्द भी कहते हैं, और जिसकी सत्त कुदरत से सोहंग पुरुष और पारब्रह्म और ब्रह्म और माया प्रघट हुए। दूसरा सोहंग पुरुष का शब्द, तीसरा पारब्रह्म का शब्द, जिसकी मदद से तीन लोक की रचना ठहरी हुई है। चौथा ब्रह्म शब्द जो कि प्रणव है, और जिससे सूक्ष्म यानी ब्रह्मांडी वेद और ईश्वरी माया प्रघट हुए। पाँचवाँ माया और ब्रह्म का शब्द, जिससे तिरलोकी की रचना का मसाला प्रघट हुआ और आकाशी वेद ज़ाहिर हुए। माया शब्द के नीचे वैराट पुरुष का शब्द और जीव और मन का शब्द प्रघट हुआ।

(४०) इस वक़्त में जो कोई शब्द के अभ्यास का ज़िकर भी करते हैं, तो सिवाय नीचे के ऊँचे शब्दों की उन को ख़बर भी नहीं है। और बाज़े बैराटी शब्द को ही करता शब्द मानते हैं, और कोई २ माया और ब्रह्म के मिले हुए शब्द का सिर्फ़ ज़िकर करते हैं, मगर उसकी महिमा और सिफ़त और उसके स्थान और अभ्यास की जुगत से जिस से वह प्राप्त होवे नावाक़िफ़ हैं इन सब शब्दों का हाल सारबचन पोथी में तफ़सीलवार लिखा हुआ है।

(४१) तरीक़ा राधास्वामी यानी संत पंथ का भक्ती मारग का है, यानी सच्चे और पूरे मालिक के चरनों में प्रेम और प्रीति और प्रतीति करना, इस को उपाशना या तरीक़त भी कहते हैं। इस मारग में या तो संत सतगुरू और साध गुरू की महिमा है या उनके असली शब्द स्वरूप की महिमा है। संत सतगुरु उनको कहते हैं कि जो सत्तलोक में पहुंचे हैं, और परम संत उन को कहते हैं कि जो राधा-स्वामी के मुक़ाम पर पहुंचे, और साधगुरू उनको कहते हैं कि जो ब्रह्म और पारब्रह्म के मुक़ाम पर पहुंचे। और जो यहाँ तक नहीं पहुंचे उनको साधू

और सतसंगी कहा जाता है। इन दोनों यानी संत और साधगुरू का असली स्वरूप शब्द स्वरूप है, और ज़ाहिरी स्वरूप नर स्वरूप यानी इन्सानी ख़िरक़ा है जो कि वे लोगों के समझाने और बुझाने और उपकार और उद्धार के लिये धर कर संसार में प्रघट होते हैं। जब यह मालूम हुआ कि यह पूरे संत या पूरे साध हैं तो फिर उन में और सत्तपुरुष या पारब्रह्म में भेद नहीं माना जाता है। इस वास्ते जब जब पूरे संत या पूरे साध प्रघट होते हैं तो उनके चरन सेवक उनकी महिमा सत्त-पुरुष या पारब्रह्म की बराबर करते हैं और बाहर में उनकी पूजा और सेवा और आरती वग़ैरह उसी तौर से बजा लाते हैं जैसे कि मालिक की करना चाहिये और इस ज़ाहिरी स्वरूप की सेवा और दर्शन और बचन और उनके चरनों में प्रेम और प्रीति करने से और जो जुगत वे बतलावें उसके अभ्यास करने से सुरत यानी जीवात्मा मन और माया के जाल से अलहदा होकर आ-काश में और उसके परे चढ़ती है, और अंतर स्वरूप यानी शब्द में पहुंचती है, तब सच्चा और पूरा उद्धार जीव का होता है।

(४२) जब तक कि पूरे संत या पूरे साध न मिलें तब तक खोजी को मुनासिब है कि उनकी तलाश में रहे, और जो कोई उनका सतसंगी यानी सेवक मिल जावे, कि जिस ने उनके दर्शन और सेवा बखूबी करी है, और उनसे भेद शब्द मारग का हासिल करके अभ्यास किया है, और कर रहा है, तो उस से प्रीति करे और भेद मारग और मंज़िल का और जुगत उसके प्राप्ती की यानी तरीक़ अभ्यास का दरियाफ़्त करके उसकी कमाई शुरू करे, और सच्चा इष्ट राधास्वामी के चरनों में जो कुल के मालिक हैं, और जहाँ के पहुंचने का इरादा हर एक परमार्थी को मज़बूत करना चाहिये, बाँध कर अपना काम करना शुरू करे। जो प्रीति और प्रतीति सच्ची और शौक़ सच्चा और पक्का होगा तो ज़रूर कुल मालिक आप किसी न किसी वक्त पर चाहे जिस रूप से हो दर्शन देकर, इस जीव का काम अपनी दया और कृपा से बनावेंगे।

(४३) राधास्वामी नाम कुल मालिक ने अपना आप प्रघट किया है, और जब कि हजूर राधास्वामी साहब के चरन सेवकों को कुछ अभ्यास और सतसंग करने से कुछ २ उनकी भारी कुदरत और गति

मालूम हुई और कुछ उन्होंने अपनी कृपा से थोड़ी अपनी पहिचान बख़्शी, तब से उनको उसी नाम से (कि जिस मुक़ाम यानी राधास्वामी पद से कि वे आये थे) पुकारना शुरू किया, और वे अपनी मौज से इस कलयुग में जीवों पर निहायत दया करके संत सरूप औतार धारन करके प्रघट हुए।

संतमत में वही क़ायदा जारी है, जो और तरीक़त यानी उपाशना वालें के मत में जारी है और वह यह है कि सतगुरु पूरे यानी मुरशिद कामिल में और मालिक में भेद नहीं करते, और इसी सबब से उनको उसी नाम से पुकारते हैं जो कि असली नाम उस मुक़ाम यानी पद का है जहाँ से कि वे आये हैं। राधास्वामी नाम और सुरत शब्द की एकही सिफ़त है, जैसे समुद्र और उसकी लहर, और शब्द और उसकी धुन, प्रेमी और प्रीतम, इन सब का मतलब एकही है।

(४४) इस मत के मानने वालों और सुरत शब्द के अभ्यास करने वालों को चंद रोज़ में आप उनके अन्तर में मालूम हो जावेगा, कि यह क्या भारी नया मत और दुर्लभ पदार्थ उनको मिला है और जिस क़दर दिन २ उनकी हालत मोक्ष

ओर उद्धार की होती जावेगी, उसको वे आप देखलेंगे और सब संतों के सिद्धान्त और मुक़ाम की ओर उनकी गति की आप ख़बर हो जावेगो, कि कौन मत कहाँ से निकला है, और कहाँ तक उसकी रसाई ओर पहुंच है।

(४५) यह मत ओर उसका अभ्यास ख़ास कर उन लोगों के वास्ते है, जिनको सच्चे मालिक के मिलने की चाह है, ओर जिनको अपने जीव के कल्यान और उद्धार का दिल से फ़िकर है। और जो लोग कि दुनियाँ के सामान और नामवरी और मान वड़ाई और इल्म यानी बिद्या को पसंद करते हैं, और परमार्थ को अपना रोज़गार मुक़र्रर करते हैं, उनके वास्ते यह उपदेश नहीं है और न उनको यह कलाम पसंद आवेंगे बल्कि जहाँ तक मुमकिन होगा वे इस पर तान करेंगे और ग़लत और फ़ज़ूल ठहरावेंगे और सबब इसका यह है कि इस कलाम को सुनकर उनका मन घबरा जाता है कि इसको मानने से उनकी दुनियाँ और देह के मज़े बिलकुल जाते रहेंगे, और रोज़गार में फ़र्क़ आजावेगा। इस वास्ते वे जहाँ तक बन सकेगा ऐसी कोशिश करेंगे, कि यह मत जारी न होवे,

ताकि जिन जीवों को उन्होंने ग़फ़लत में डाल रक्खा है, और तरह बतरह की पूजाओं में फँसा रक्खा है, और उनसे अपने रोज़गार और आमदनी की सूरत पैदा कर रक्खी है, वे उनके क़ौल और हुक्म बरदारी से अलहदा न हो जावें, और उनकी पूजा और आमदनी में ख़लल न पड़े।

(१६) एक साधू महाराज गिरधारी दासजी साहब कि जो महाराज तुलसी साहब के साधुओं में अव्वल दर्जे के परमार्थी और अभ्यासी थे और हर शख़्स से बड़ी प्रीति और ख़ातिर से पेश आते थे, और निहायत दर्जे के ख़लीक़ थे उनसे स्वामीजी महाराज बड़ी प्रीति रखते थे बल्कि उनको बड़ा बुज़ुर्गतर और महात्मा मानते थे, और बहुत उनका अदब और ताज़ीम करते थे, यहाँ तक कि उनको अपने दूसरे मकान में कई बरस तक ठहराया और उनकी ख़ातिरदारी और ख़िदमतगुज़ारी हर तरह के खाने पीने व कपड़े ख़र्च वग़ैरह की बहुत करते रहे। एक दफ़े का ज़िक्र है कि महाराज गिरधारी दासजी लखनऊ को गये हुए थे, और वहाँ बीमार होगए। हज़ूर राधास्वामी महाराज को इत्तिला हुई, तब महाराज खुद मय चंद सेवकों

के लखनऊ को तशरीफ़ ले गये। उस वक़्त में गिरधारी दासजी महाराज ज़्यादा बीमार थे मगर सब तरह से होश व हवास दुरुस्त थे और गुफ़्तगू करते थे। तो उन्होंने स्वामीजी महाराज से बयान किया, कि अब हमारी हालत ज़्यादा बदलती जाती है, और अब जल्द देह छूट जावेगी मगर एक अमर का इस वक़्त बड़ा अफ़सोस है, कि सुरत इस वक़्त शब्द को नहीं पकड़ती है, और शब्द भी गुम हो गया है, अब ऐसी सूरत हो कि शब्द को साथ लिये हुए सुरत अपने लोक को जावे। उसी वक़्त स्वामीजी महाराज ने अपनी सुरत का बल दिया, और महाराज गिरधारीदास जी ने बयान किया, कि अब सुरत ठिकाने पर आगई, और फिर परम धाम को चली गई। इस से यह नहीं समझना चाहिये कि चूंकि तमाम ज़िंदगी का भजन सुमिरन इसी वास्ते होता है कि अख़ीर वक़्त पर काम आवे और अगर अख़ीर वक़्त पर शब्द गुम हो गया तो भजन से क्या फ़ायदा हुआ। यह देही पिछले करमों से बनी हुई है, जब जैसे करम का चक्कर आता है, तब वैसाही असर पैदा करता है, किसी पिछले करम के असर से

शब्द गुम हो गया होगा, मगर कमाई की हुई ज़ाया नहीं हो सक्ती। लिहाज़ा उस कमाई के बल से यह संजोग भी पैदा हो गया कि उस वक़्त हुज़ूर स्वामीजी महाराज वहाँ तशरीफ़ फ़रमा हो गये और उन का काम पूरा हो गया।

(४७) स्वामीजी महाराज ने संवत् १९१७ बसंत पंचमी के दिन से मुताबिक़ जनवरी सन् १८६१ ई० के, बदरख़्वास्त और प्रार्थना बाज़े सतसंगी और सतसंगिनों के, जो ज़्यादा एक बरस से वास्ते जारी फ़रमाने आम सतसंग के ख़िदमत शरीफ़ में अर्ज़ कर रहे थे, उनकी अर्ज़ क़बूल फ़रमाकर अपने मकान पर, बयान संतमत और उसका उपदेश परमार्थी लोगों को फ़रमाना शरू किया। और यह सतसंग साढ़े सत्तरह बरस तक बराबर रात और दिन जारी रहा, और अक्सर चरचा व बचन फ़रमाने में कभी शाम से आधी रात और कभी सुबह हो जाती थी। इस अर्से में क़रीब आठ दस हज़ार मर्द व औरत ने बहुत से क़ौम हिन्दू व हर मुल्क के और थोड़े मुसलमान और जैनी और सरावगी और कोई २ ईसाई ने हुज़ूर स्वामीजी महाराज से, उपदेश संतमत यानी राधास्वामी

पंथ का लिया । इनमें से बहुतेरे गृहस्ती थे, और क़रीब एक हज़ार साधुओं के होगें । बाज़े २ जिन्हों ने अभ्यास शौक़ के साथ किया, चंद बार वास्ते दर्शन और इज़हार अपने हाल और दरियाफ़ करने हालत और बारीकियाँ और गुप्त भेद मज़कूर के आये, और अपने अभ्यास की हालत में ताक़त और कुदरत और बुजुर्गी हुज़ूर स्वामी जी महाराज की और अंतरी दया जो उन पर फ़र्माई देखकर, दिल व जान से मोतक़िद हुए और निहायत प्रीति और प्रतीति चरनों में करने लगे ।

(४८) और यह साधू लोग साबिक़ से भेष लेकर तलाश में परमारथ के निकले थे, और आगरे में पहुंच कर महिमाँ और सिफ़त हुज़ूर राधास्वामी साहब की सुनकर चरनों में हाज़िर हुए, और भेद लेकर अभ्यास में लग गये । और जब उनको कुछ कुछ रस अभ्यास व सतसंग का मिलने लगा, तब अपना क़याम आगरे में रक्खा, और अब भी सौ दो सौ साधू राधास्वामी बाग़ में जो शहर से बफ़ासला तीन मील के वाक़ै है, और आगरा शहर में स्वामीजी महाराज के मकान और हुज़ूर साहब के मकान पर व इलाहाबाद में पण्डितजी महाराज

के मकान पर रहते हैं व गृहस्ती मर्द व औरत भी रहते हैं, और सतसंग व अभ्यास करते हैं।

(४९) मालूम होवे कि अक्सर लोग दो चार दस पाँच इकट्ठे होकर, इस नज़र से महाराज के पास आया करते थे कि उनको क़ायल करें क्योंकि महाराज गँगा जमुना मंदिर मूरत तीरथ वरत और नेम आचार वग़ैरह का खंडन करके, सिर्फ़ एक सच्चे मालिक का ऐतक़ाद बँधवाते थे, (जैसा कि ऊपर बयान हो चुका है) और सुरत शब्द मारग की कमाई का मंडन करते थे जो कि अब तक राधास्वामी मत में जारी है। यह लोग बड़े ज़ोर शोर में आकर बैठते और चरचा शुरू करते और जब महाराज के वचनों की मार शुरू होती तो ऐसे शरमिन्दा और आजिज़ हो जाते, कि उन में से अक्सर तो चुपके चले जाते थे, और बाज़े वचनों को सुनकर मोह जाते थे, और फिर रोज़मर्रा सतसंग में शामिल होने लगते। बहुत से उनमें से सच्चे परमार्थी बन गये और सुरत शब्द के अभ्यास का भेद लेकर परमार्थ की कमाई करने लगे, और संतमत की बुज़ुर्गी और बड़ाई बख़ूबी उनके ज़िहन नशीन हो गई, तब अपने भागों

को सराहते थे। महाराज के दर्शन और बचन का यह असर था, कि संसकारियों का दिल फ़ौरन आप की तरफ़ मायल होकर सरन क़बूल कर लेता था, और निपट संसारी भी रूबरू आने से आइन्दा के वास्ते संसकारी बन जाते थे। इसमें शक नहीं कि महाराज के बचन और दर्शन ऐसा असर रखते थे, कि लोगों ने यह मशहूर कर रक्खा था, कि जो कोई उनकी गली में जाता है, वह उनकी लालटेन के नीचे जातेही उनका गुन गाने लग जाता है, उस लालटेन में जादू है, इस तरह नादान लोग ख़ास गली की आमद व रफ़्त में रुकते थे।

(५०) मालूम होवे कि जिस वक़्त में हुज़ूर स्वामी जी महाराज फ़रीदाबाद में, जहाँ कि महाराज की सुसराल थी तशरीफ़ रखते थे, उस वक़्त में राधाजी महाराज के भतीजे का लड़का बीमार हुआ। उसकी उमर क़रीब दो तीन साल की होगी और चूंकि वह अपने वालिदैन की ज्यादा उमर में पैदा हुआ था, और उस घर में वही एक लड़का था, इस लिये तमाम घर को बहुत अज़ीज़ था। जब उस की बीमारी ज्यादा हुई, तब कुछ साहबों ने राधाजी महाराज से अर्ज़ की कि तुम स्वामीजी

महाराज से अर्ज़ करो वे इस लड़के को अपनी दया से सेहत बख़्शें, चुनांचि उन लोगों की दरख़्वास्त के बमूजिब राधाजी महाराज ने जिन को खुद भी उस लड़के से मुहब्बत थी अर्ज़ की। तो स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि इस लड़के की उमर इतनीही है, और हुक्म करतार का मेटना मुनासिब नहीं है, मगर एक बात बेशक हो सक्ती है, कि हम उस को अपनी उमर में से जितने बरस कि तुम कहो दे सक्ते हैं। इस बात को राधाजी महाराज ने मंजूर नहीं किया, तब यह लड़का दो रोज़ बाद इन्तक़ाल कर गया।

(५१) मख़्फ़ी न रहे कि संत हमेशा अंतरी परचे सुरत के चढ़ाने के, और रूह को माया के जाल से निकाल कर ऊपर के लोकों में पहुंचाने के, अपने प्यारे सेवकों को दिखलाया करते हैं, जिनके वास्ते वे खुद इस संसार में प्रघट होते हैं। और माया के सामान को तरक़्क़ी देने के परचे, जिनसे कि वे अपने सेवकों को असलन नफ़रत दिला कर दूर हटाना चाहते हैं, हरगिज़ दिखलाना पसंद नहीं फ़रमाते। हाँ, ख़ास ख़ास मौक़ों पर अपने निज प्यारे सेवकों की ख़ातिर से, ऐसे परचे भी दे देते हैं,

और उसमें असली मंशा परमार्थी तरक़्क़ी का होता है। संतों का मत आशिक़ों का मत है।

॥ शेर ॥

मज़हबे आशिक़ ज़े मज़हबहा जुदास्त ॥

मत प्रेमियों का और मतों से निराला है।

आशिक़ाँरा मज़हबो मिल्लत ख़ुदास्त ॥

प्रेमियों का मत और मारग तो सिर्फ़ प्रीतम ही है।

आशिक़ी के मानी यह नहीं हैं कि अपने माशूक़ की मौज और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अपनी ख़्वाहिश पेश करें, बल्कि जो कुछ मौज माशूक़ की होती है, वही दिलको प्यारी लगती है। जब कि दुनियाँ में बाज़े लोगों में ऐसी मुहब्बत बढ़ जाती है कि यह कहा जाता है कि यह दो शख़्स दो क़ालिब* और एक जान हैं तो संत जो सच्चे आशिक़ उस सच्चे माशूक़ के हैं, और जहाँ दो क़ालिब भी नहीं, और सच्चे मालिक के साथ एक जान हो रहे हैं, उनको कब मंज़ूर हो सक्ता है, कि अपने माशूक़ की मौज के ख़िलाफ़ करें। बल्कि जो मालिक की मौज होती है वही उनकी मौज होती है, और जब वे इस तरह से मालिक के साथ एक जान और एक दिल हो रहे हैं तो उनमें और मालिक में कोई भेद नहीं,

* देह।

वे मालिक के ही स्वरूप हैं। इसी वास्ते संतों के मत में मौज में राज़ी रहना सच्चे आशिक़ की निशानी रक्खी गई है, कि जिसकी ताईद और महिमाँ शब्द मुफ़स्सलै ज़ैल में की गई है।

बक़ौल हज़ूर स्वामीजी महाराज के

॥ शब्द ॥

गुरू की मौज रहो तुम धार।
गुरू की रज़ा सम्हालो यार ॥ १ ॥
गुरू जो करें सो हित कर जान।
गुरू जो कहें सो चित धर मान ॥ २ ॥
शुकर की करना समझ बिचार।
सुक्ख दुख देंगे हिकमत धार ॥ ३ ॥
ताड़ और मार करें सोइ प्यार।
भोग सब इन्द्री रोग निहार ॥ ४ ॥
कहूं क्या दम दम शुकरगुज़ार।
बिना उन और न करनेहार ॥ ५ ॥
दुखी चित से न हो दुख लार।
सुखी होना नहीं सुख जार ॥ ६ ॥
बिसारो मत उन्हें हर बार।
दुक्ख और सुक्ख रहो उन धार ॥ ७ ॥
गुरू और शब्द यह दोउ मीत।
नहीं कोइ और इन धर चीत ॥ ८ ॥

यही सतपुर्ष यही करतार।
लगावें तोहि इक दिन पार॥ ९॥
बिना उन कोई नहीं संसार।
देव मन सूरत उन पर वार॥ १०॥
करें वह नित्त तेरी सार।
तेरे तन मन के हैं रखवार॥ ११॥
शुकर कर राख हिरदे धार।
मिटावें दुक्ख सबही झाड़॥ १२॥
करें क्या मन तेरा नाकार।
नहीं तू छोड़ता बिष धार॥ १३॥
भोग में गिरे बारम्बार।
न माने कहन उनकी सार॥ १४॥
इसी से मिले तुझ को दंड।
नहीं तू मानता मति मंद॥ १५॥
सहो अब पड़े जैसी आय।
करो फ़रियाद गुरु से जाय॥ १६॥
पकड़ फिर उन्हीं को तू धाय।
करेंगे वोही तेरी सहाय॥ १७॥
बिना उन और नहीं दरबार।
रहो उन चरन में हुशियार॥ १८॥
गुनह तुम किये दिन और रात।
गुरू की कुछ न मानी बात॥ १९॥

इसी से भोगते दुख घात ।
बचावेंगे वही फिर तात ॥ २० ॥
रहो राधास्वामी के तुम साथ ।
लगे फिर शब्द अगम तुम हाथ ॥२१॥

(५२) अब यह भी मालूम होना चाहिये, कि जिस क़दर मौज के साथ मुवाफ़िक़त करने की ताक़त कम है, उसी क़दर इश्क़ का दर्जा कम है । और जिसने पूरा २ मौज का आसरा ले लिया है, उसके उद्धार में कुछ शक नहीं है, और ऐसा शख़्स बिदून करनी किये ख़ाली भी नहीं रहता है, और मालिक की मौज में रहता है, और प्रेम में डूबा रहता है, जैसा कि इन शब्दों में बयान किया है ।

शब्द दूसरा (जिल्द नई) सारबचन, सफ़ा ५३६

दर्द दुखी मैं बिरहन भारी ।
दर्शन की मोहिं प्यास करारी ॥ १ ॥
दर्शन राधास्वामी छिन २ चाहूं ।
बार बार उन पर बलि जाऊँ ॥ २ ॥
वह तो ताड़ मार फटकारें ।
मैं चरनन पर सीस चढ़ाऊँ ॥ ३ ॥
निरधन निरबल क्रोधिन मानी ।
मैं गुन अपने अब पहिचानी ॥ ४ ॥

स्वामी दीनदयाल हमारे ।
मोसी अधम को लीन उबारे ॥ ५ ॥
मैं ज़िद्दन दम दम हठ करती ।
मौज हुकम में चित्त न धरती ॥ ६ ॥
दया करो राधास्वामी प्यारे ।
औगुन बख़्शो लेव उबारे ॥ ७ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

कैसी करूँ कसक उठी भारी ।
मेरी लगी गुरू सँग यारी ॥ १ ॥
दम दम तड़पूं छिन छिन तरसूं ।
चढ़ रही मन में बिरह खुमारी ॥ २ ॥
सुलगत जिगर फटत नित छाती ।
उठन लगी हिये से चिनगारी ॥ ३ ॥
नैनन नीर बहत जस नदियाँ ।
डूब मरी माया मतवारी ॥ ४ ॥
ठंढी आह उठै पल पल में ।
छाय गई अब प्रीति करारी ॥ ५ ॥
तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे ।
काल करम पच हारी ॥ ६ ॥
सुरत निरत दोउ क़ासिद कीन्हे ।
बिथा लिखूं अब सारी ॥ ७ ॥

पतियाँ भेजूं गुरु दरबारा ।
अब लो ख़बर हमारी ॥ ८ ॥
नगर उजाड़ देश सब सूना ।
तुम बिन जग अँधियारी ॥ ९ ॥
कौन सुने और कौन सम्हारे ।
सब मोहिं दीन्ह निकारी ॥ १० ॥
बही जात नइया मँझ धारा ।
तुम बिन कौन उबारी ॥ ११ ॥
खेवटिया क्यों देर लगाई ।
क्योंकर करूँ पुकारी ॥ १२ ॥
मैं मरी जाउँ जिऊँ अब कैसे ।
तुम मेरी सुध न सम्हारी ॥ १३ ॥
डालो जान देव सरजीवन ।
मैं तुम पर बलिहारी ॥ १४ ॥
बचन सुनाओ दरश दिखाओ ।
हरो पीर मेरी सारी ॥ १५ ॥
राधास्वामी सुनो हमारी ।
मैं तुम्हरे आधारी ॥ १६ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

पिया बिन कैसे जिउँ मैं प्यारी ।
मेरा तन मन जात फुका री ॥ १ ॥

कोई संत मिलें अब भारी ।
जो पिया को मिलावें आ री ॥ २ ॥
मैं चढूं गगन में सारी ।
दिन रात लगे मेरी ताड़ी ॥ ३ ॥
मैं बिरहन लगी कटारी ।
मैं घायल फिरूँ उजाड़ी ॥ ४ ॥
सत गुरु अब करें सम्हारी ।
तब हिरदे घाव पुरा री ॥ ५ ॥
मोहिं नाम देयँ निज सारी ।
यह मरहम नित्त लगा री ॥ ६ ॥
राधास्वामी करें दवा री ।
मैं उन पर जाउँ बलिहारी ॥ ७ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

दर्द दुखी जियरा नित तरसे ।
तन मन में पीर घनेरी ॥ १ ॥
कोइ सतगुरु संत दया कर हेरें ।
तो मिटै बिथा घट मेरी ॥ २ ॥
मैं अति दीन अनाथ अचेती ।
उन बिन को मोहिं गहे री ॥ ३ ॥
क्या क्या कहूं काल जस कसियाँ ।
फँसियाँ आन अँधेरी ॥ ४ ॥

मन की बात मनहिं पुनि जाने ।
मुख से क्यों कहत बने री ॥ ५ ॥
अन्तरजामी वैद मिलें जब ।
तब दुख दूर टरे री ॥ ६ ॥
आपहि आप रोग मेरा बूझें ।
आपहि दें कुछ दवा भली री ॥ ७ ॥
मैं तो अजान निपट कर मूढ़ा ।
भूला गैल गलीरी ॥ ८ ॥
तुम दयाल कस ढील करोगे ।
जल्दी से अब कर्म दले री ॥ ९ ॥
सतसँग सार न बूझे चंचल ।
ठहरत नहिं छिन एक पली री ॥ १० ॥
राधास्वामी अचरज धामी ।
आन मिले सब पीर हरी री ॥ ११ ॥

॥ शब्द महाराज हुजूर साहब ॥

मन तू करले हिये धर प्यार ।
राधास्वामी नाम का आधार ॥ टेक ॥
राधास्वामी नाम है अगम अपारा ।
जो सुमिरे तिस लेहि उबारा ॥
सुन घट में अनहद झनकार ॥ १ ॥

राधास्वामी धाम है ऊँच से ऊँचा ।
संत बिना कोइ वहाँ न पहुंचा ॥
दरश किया जाय कुल करतार ॥ २ ॥
राधास्वामी नाम की महिमा भारी ।
शेष महेश कहत सब हारी ॥
लीला अपर अपार ॥ ३ ॥
राधास्वामी परम पुरुष जग आये ।
हंस जीव सब लिये मुक्काये ॥
और जीवन पर बीजा डार ॥ ४ ॥
नाम की महिमा बहु बिधि गाई ।
मुक्ती की यहि जुगत बताई ॥
सुमिरो राधास्वामी बारम्बार ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम का भेद सुनाया ।
सुरत शब्द मारग दरसाया ॥
धुन सँग सुरत चढ़ाओ पार ॥ ६ ॥
धुन्आत्मक जो राधास्वामी नामा ।
तिस महिमा कस करूं बखाना ॥
जो सुने सोइ जाय निज घर बार ॥७॥

चूंकि संत मत में कि जहाँ पर सच्चा निरनय हो कर यह बयान किया जाता है कि तीरथ बरत मूरत मंदिर गंगा जमुना वगैरह से जीव का उद्धार

नहीं हो सक्ता है, बल्कि सच्चे मालिक की तरफ़ से यह सब करम भुलाने और भटकाते हैं, क्योंकि यह काम रोज़गारियों ने अपने रोज़गार के वास्ते चलाया है. और ऐसे निरनय से उनके रोज़गार में ख़लल पड़ता है, तो वे लोग ज़रूर संतों की निंदा करते हैं। इस निंदा की वजह यह है कि जब संत सिर्फ़ मालिक कुल और गुरुसेवा और नाम की महिमा करके उन में प्रेम प्रतीति और भाव व सरधा बढ़ाते और मज़बूत कराते हैं, और संसार के पदार्थों से चित्त को उपराम कराते हैं, तब परमार्थी जीवों की सरधा इन करमों भरमों से कि जो संसार में जारी हैं बिल्कुल जाती रहती है, तो उन निंदकों की भेंट पूजा में ख़लल ज़रूर हो जाता है और उनकी तरफ़ प्रेम नहीं रहता है। और संतों का मत ख़ास प्रेम का है, तो यह प्रेम चैतन्य पुरुष के साथ यानी गुरु के साथ करने से बढ़ता जाता है। सो इस प्रेम या इश्क़ की कैफ़ियत को आशिक़ ही जानता है, जिसको कभी इश्क़ सच्चे गुरु और मालिक में हुआ ही नहीं, वह इश्क़ के मज़े को क्या जानेगा, तो उस अरूप और अलख मालिक के साथ इश्क़ की कैफ़ियत इन दुनियादारों

के ज़िहन में कैसे समा सक्ती है। वह तो भक्तों की हालत पर ज़रूर हँसेंगे, क्योंकि वे लोग ऐसा माद्दा नहीं रखते जिससे भक्तों के दिल की कैफ़ियत का अंदाज़ा कर सकें। संत मत दुनिया को भुलाता है और मालिक की याद में लगाता है, और दुनिया-दार बरख़िलाफ़ इसके दुनिया की याद करते हैं, और मालिक को भूल जाते हैं, फिर मेल कैसे होवे, और जब मेल नहीं तो वह ज़रूर संतों के निंदक होंगे।

(५३) मालूम होवे कि हजूर स्वामी जी महाराज के सेवक मर्द और औरत बहुत थे, मगर उनमें से चंद ख़ास २ का ज़िकर किया जाता है, जो कि हमेशा बड़ी सरधा और प्रेम के साथ सेवा बाहरी और अंतरी करते थे, और वक्त २ के सतसंग में हाज़िर रह कर अपना जनम सुधारते थे, और जिन पर ख़ास दया थी—उनमें से एक बंदा ख़ाकपा प्रतापा है, कि जिसको इसी तरह पर महाराज पुकारते थे, और जिसका उर्फ़ चाचाजी है, बिरादर ख़ुर्द हुजूर स्वामी जी महाराज का दासानुदास, जब इसकी उमर क़रीब दस बारह बरस की होगी, तब से बराबर स्वामीजी महाराज के चरनों में ही

रहता आया और कभी दूर नहीं हुआ, और महाराज मौसूफ़ ने ही इसकी परवरिश की, और दीन और दुनिया के सब काम सुधारे यानी पढ़ाना लिखाना ब्याह शादी और परमार्थ की दात और दया सब फ़रमाते रहे। और शुरू में जब से कि कुछ होश आया, तब से गुरू भाव लाकर हमेशा यह बंदा बराबर सेवा और फ़रमाँबरदारी में उनकी दया से मज़बूत और मुस्तहकम रहा आया यानी जो कुछ स्वामीजी महाराज फ़रमाते थे उनकी मौज से वही करता था। और अपनी स्त्री और पुत्रों का तो कभी कुछ ख़याल भी नहीं किया, अपनी स्त्री के कहने पर कभी तवज्जह नहीं करता था, और जो कुछ स्त्री को अर्ज़ मारूज़ करनी होती थी, वह बज़रीये राधाजी महाराज के ख़िदमत में स्वामीजी महाराज के की जाती थी और जैसा स्वामीजी महाराज हुक्म फ़रमाते थे उस की तामील होती थी। इसी तरह से उनकी दया से अपनी स्त्री को भी राधाजी व स्वामीजी महाराज का आज्ञाकारी बनाया, और उनके चरनों की प्रीति और प्रतीति मज़बूत कराई। और ख़ाकसार का तो यह हाल

था कि स्वामीजी महाराज के दर्शन का सच्चा आसरा था, और सच्ची सरन उनहीं की लिये हुए रहा—जब कहीं बाहर से आता तो पहिले स्वामी जी महाराज के दर्शन करता तब चैन पड़ता, वर्नः कोई काम अच्छा नहीं लगता था। यहाँ तक स्वामीजी महाराज के चरनोँ में लाग थी, कि एक रोज़ किसी ज़िकर में स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि अगर किसी तरह की आफ़त या तकलीफ़ आवे तो परतापा का भरोसा पड़ता है, कि मेरा साथ देवेगा और किसी का मुझ को यक़ीन नहीं है। और वाक़ई ऐसीही सूरत थी कि सिवाय स्वामीजी महाराज के और किसी में ऐसी प्रीति नहीं थी और न अब तक है।

(५४) मालूम होवे कि ज़ियादा तर परमार्थ की लाग और प्रीति और स्वामीजी महाराज के चरनोँ में पूरा प्रेम और प्रतीति उस रोज़ से पैदा हुई, कि एक रोज़ बसंत पंचमी का दिन था, और उसी रोज़ महाराज किसी वजह से सुबह के वक़्त क़रीब आठ या नौ बजे के माईथान में मौज प्रकाश वाली धर्मशाला में तशरीफ़ ले गये थे और ख़ुद महाराज ने एक दो ग्रंथ साहब के शब्दों का पाठ

करके अर्थ करना शुरू किया। सो ऐसी धारा वचनों की उस वक़्त निकलती चली आती थी कि जैसे समुद्र में से लहरें उठती हैं, और उसी वक़्त कुछ एकाएक ऐसा ख़ाकसार के चित्त में संसार की तरफ़ से वैराग पैदा हुआ कि बड़ी सातुकी बृत्ती होगई, और वचन महाराज के ऐसे हिरदे में समा गये कि उसी वक़्त से हालत मन और सुरत की बदल गई, और परमार्थी न्यामत की क़दर हिरदे में ख़ूब समा गई, और महाराज की महिमा भी ऐसी चित्त में असर कर गई कि उनके दीदार के बग़ैर चैन न पड़े और स्वामीजी महाराज के हुक्म और आज्ञा के बर्तने में बहुत आनंद आने लगा, और उनकी परम संतगती का हाल चित्त में पूरा पूरा समा गया।

(५५) अब थोड़ा सा हाल राय शालिगराम साहब बहादुर उर्फ़ हुज़ूर साहब का जो कि हुज़ूर राधास्वामी साहब के ख़ास व निज प्यारे थे और जिस तरह पर कि उनका आना महाराज के चरनों में हुआ तहरीर* किया जाता है। एक मर्तबे ब-तक़रीब† दौरा यह नियाज़मन्द‡ (प्रतापसिंह) ब-

* लिखा। † वास्ते। ‡ दास।

हमराही* डाक्टर पाटन साहब पोस्टमास्टर जनरैल अज़्ला मग़रबी† व शुमाली व पंजाब व अवध व सेन्टरल‡ इन्डिया§ व राजपूताना व सेन्टरल|| प्रोविन्सेज़ बतरफ़ मेरठ गया हुआ था और वहाँ साहब बहादुर ने क़रीब एक या डेढ़ महीने के क़याम¶ फ़रमाया था, और यह नियाज़मन्द मय और दो अहलकारों** के डाकख़ाना मेरठ के अहाते में मुक़ीम†† था, इत्तफ़ाकन‡‡ राय साहब को कि जो उस वक़्त में सरे दफ़्तर थे, किसी वजह से पोस्टमास्टर जनरैल ने मेरठ में तलब किया था और राय साहब भी कि जिनको राय बहादुर का ख़िताब कुछ अर्से बाद सरकार से मिला था वे भी बराबर के ही मकान में क़याम¶ पिज़ीर थे, दरमियान§§ में सिर्फ़ एक दीवार थी। यह नियाज़मन्द अपने सुफ़्ह यानी बरामदे में, बाद फ़ारिग़ होने ज़रूरियात से सुखमनी जी का पाठ किया करता था क्योंकि उस वक़्त तक स्वामीजी महाराज ने बानी नहीं बनाई थी, उस वक़्त राय साहब को उस पाठ के सुनने में बड़ा लुत्फ़|||| आता था, और वे बहुत ग़ौर¶¶ से सुना करते थे। बाद पाठ

---

* साथ। † पश्चिमोत्तर देश। ‡ मध्य। § हिन्दोस्तान। || मध्यप्रदेश। ¶ ठहरे थे। ** अमले। †† ठहरा। ‡‡ मौज से। §§ बीच। |||| आनन्द। ¶¶ ध्यान।

करने के नियाज़मन्द सामने की तरफ़ एक छोटे से बाग़ीचे में जहाँ पर कि दो चार बड़े २ दरख़्त भी थे, और वह जगह एकान्त की थी, जाकर कुछ सुमिरन और भजन कि जिस को सुरत शब्द जोग कहते हैं किया करता था, और घंटे डेढ़ घंटे बाद जब कि खाना तैयार होता तो वहाँ से वापस आया करता था, और क़रीब दस बजे के कचहरी के काम करने को जाता था। जब यह हालत कुछ दिन तक राय साहब ने देखी तो एक मर्तबः नियाज़मंद के नौकर से दरियाफ़्त किया, कि यह बग़ीचे में जाकर क्या किया करते हैं, तो उसने जवाब दिया कि ठीक २ तो मुझ को मालूम नहीं है मगर शायद कुछ अभ्यास यानी अमल करते होंगे। एक मर्तबः जब सब साहब जो कि वहाँ ठहरे हुए थे, अपनी ज़रूरियात से फ़ारिग़ होकर, बवक़्त शब* आठ नौ बजे अपने अपने पलँग पर जो कि बराबर २ पड़े हुए थे बैठे थे, तो राय साहब ने ख़ाकसार† से कुल हाल मज़कूरः बाला‡ दरयाफ़्त किया तो जैसा कुछ हाल था बयान किया गया, और स्वामीजी महाराज की दया का

* रात। † इस दास। ‡ ऊपर का।

हाल और महिमा जो कुछ कि थी वह भी थोड़ी सी बयान की गई। उस वक्त राय साहब ने अपनी ख़्वाहिश* स्वामी जी महाराज के दर्शनों की बहुत कुछ ज़ाहिर की, और यह तै हुआ कि जब यह नियाज़मन्द वापस आगरे पहुंचेगा, तब स्वामीजी महाराज से ज़िकर करके, और उन से इजाज़त† लेकर आप को उनका दीदार करावेगा, चुनाँचि आगरे वापस आने पर स्वामी जी महाराज से राय साहब की मुलाक़ात का ज़िकर किया गया, उन्हों ने अव्वल राय साहब की लगन और परमार्थी अंग के बारे में दरियाफ़्त किया, बादहू मुलाक़ात की इजाज़त फ़रमाई, और इतवार का दिन वास्ते मुलाक़ात के मुक़र्रर हुआ। और उस रोज़ सुबह को राय साहब तशरीफ़ लाये, और स्वामी जी महाराज से इत्तला की गई। उन्होंने उसी कोठरी में जहाँ कि वे अभ्यास किया करते थे, और जोकि अंदरून दूसरी कोठरी के थी, राय साहब को बुलाया और आदर सत्कार के साथ बिठाया। राय साहब ने अपना हाल कुल अर्ज़ किया, और बहुत से सवालात परमार्थी किये, और स्वामीजी

*चाह। †आज्ञा।

महाराज से माकूल* जवाब पाने पर उनकी बहुत तशफ्फ़ी† हुई। इस पहिली ही मुलाक़ात की गुफ़्गू‡ में क़रीब चार पाँच घंटे के लगे। जब राय साहब स्वामीजी महाराज से रुख़सत होकर बाहर निकले तो मुझ से बयान किया कि जिन को मैं खोजता था मुझे तो वेही मिल गये यानी मैं अपनी किशोर अवस्था में यही प्रार्थना किया करता था, कि हे मालिक मुझको तू ही मिल तो मुझ को तो मालिक मिल गये और बड़े गदगद और खुश होकर वहाँ से अपने मकान को तशरीफ़ ले गये। कुछ दिन तक इतवार के इतवार स्वामीजी महाराज के चरनों में तशरीफ़ लाते रहे—बादहू हफ़्ते में दो तीन वार, और फिर रोज़मर्रा हाज़िर ख़िदमत§ होने की इजाज़त लेकर तशरीफ़ लाते रहे।

(५६) हजूर साहब का परमार्थी अंग उन की छोटी सी ही उमर में ज़ाहिर होगया था। बरवक्त़ शादी हस्ब रवाज‖ बिरादरी यह ज़रूर हुआ कि वे गुरदीक्षा लेवें, क्योंकि हजूर साहब की बिरादरी में अमूमन¶ यह दस्तूर जारी था, कि आठ नौ बरस

* ठीक। † शान्ती। ‡ बातचीत। § चरनों। ‖ दस्तूर। ¶ सब में।

की उमर में लड़के को मथुरा बिन्द्रावन के गुसाइयों से गुरदीक्षा दिलवा देते थे, लेकिन हुज़ूर साहब ने अपने खानदानी गुसाईंजी से, उसी उमर में चन्द दक़ीक़* सवालात मज़हबी† किये, जिन के जवाब बासवाब‡ न पाने पर गुरदीक्षा लेने से इनकार किया। मगर फिर मजबूर कराये जाने पर यह शर्त की कि जब कोई लायक़ गुरू मिलेंगे, तब उनको गुरू धारन किया जावेगा।

(५७) जब राय साहब स्वामीजी महाराज के चरनों में आये जैसा कि ऊपर बयान हुआ है, और उन पर निश्चय आया, तब उन्होंने बिन्द्राबन में अपने गुसाईं जी के पास जाकर, उन से सुरत शब्द जोग का हाल कहा, और स्वामीजी महाराज का पता बतला कर कहा कि या तो गुसाईं जी इस मारग का भेद बतावें और अभ्यास में मदद दें, वर्ना, स्वामीजी महाराज को गुरू धारन करने की इजाज़त दें बल्कि खुद भी स्वामीजी महाराज को गुरू धारन करके अपना उद्धार करावें। चुनाँचि गुसाईंजी हमराह§ राय साहब के अक्सर स्वामीजी महाराज के सतसंग में हाज़िर होकर फ़ायदा

* कठिन। † परमार्थी। ‡ ठीक। § साथ।

परमार्थ का हासिल करते रहे। और जब राय साहब की अच्छी तरह से हर एक पहलू* में तसल्ली होगई तब स्वामीजी महाराज से उपदेश लिया और बाद अज़ाँ† बड़ी भक्ती के अंग की सेवा और अभ्यास करते रहे।

(५८) क़रीब बीस बरस के हुज़ूर साहब ने स्वामीजी महाराज का सतसंग किया, और सेवा तन मन धन से ऐसी अव्वल दरजे की की, कि जिसको देख कर लोग तअज्जुब करते थे, और उन भक्ती के अंगों को ग़ौर करके सैकड़ों को इबरत‡ होती थी, और उनकी वजह से उसी वक़्त में बहुत से लोग भक्ती की चाल में बर्ताव करने लगे। स्वामीजी महाराज के वास्ते मीठा पानी शहर के बाहर के कुओं से ख़ुद कंधे पर रख कर वहमराही§ बहुत से सतसंगियों के बहुत रोज़ तक लाते रहे। दोपहर को जेठ वैसाख में नंगे पैर जलते पत्थरों पर एक मील से पानी लाते थे। महाराज के भोग के वास्ते आटा पीसते थे और दरख़्तों पर से दातनें तोड़कर लाते थे और मट्टी खोदकर लाते थे और हर क़िस्म की सेवा ऊँच नीच करते थे और बहुत ख़ुश होते थे।

* अंग। † पीछे। ‡ शरम आती व नसीहत होती। § साथ।

राय साहब की दुनियावी और परमार्थी कार-रवाई में हुज़ूर राधास्वामी दयाल ने बड़ी दया फ़रमाई। जब से वे महाराज के चरनों में आये, तब से मुलाज़मत में तरक़्क़ी बहुत जल्दी जल्दी होती गई यहाँ तक कि बाद देहान्त स्वामीजी महाराज पोस्टमास्टर जनरैल हो गये और जब तक स्वामीजी महाराज रहे उस काम को अवध में मंज़ूर न किया और सतसंग को बड़ा रखकर आगरा न छोड़ा और तनख़्वाह भी हज़ार रुपये से ऊपर होगई। पेश्तर काम दफ़्तर का इनके तअल्लुक़* इतना ज़ियादा था कि अलस्सुबह से दस ग्यारह बजे रात तक सिवाय कार ज़रूरी के और मुतलक़ फ़ुरसत न रहती थी, मगर फिर महाराज की दया से जब कि सुपरिन्टेन्डेंट होगये थे, काम इस क़दर कम हो गया कि सिर्फ़ दो तीन घंटे काम करते थे। और उस वक़्त में बहुत से आदमियों के साथ मसलूक† हुए यानी बहुत से आदमियों का रोज़गार लगा दिया, हज़ारहा मोहताज हुज़ूर साहब की ज़ात‡ से परवरिश पाते थे। जब हुज़ूर स्वामीजी महाराज बचन फ़रमाते थे,

* पास। † उपकार किया। ‡ दम।

तब राय साहब मौसूफ़ की आँख ख़ास कर उनके दीदार में लगी रहती थी बल्कि हर वक़्त दर्शन का आधार रहता था और बचन सुन सुनकर हिरदा गदगद हो जाता था यानी स्वामीजी महाराज के दीदार का पूरा पूरा इश्क़ पैदा हो गया और बड़ी मज़बूत प्रीति और प्रतीति क़ायम हो गई।

(५९) जो वक़्त कि हाज़िरी के थे उस में कभी चूक नहीं होती थी, बारह पंद्रह घंटे रोज़ हाज़िरी देते थे और दर्शनों को बहुत तड़पते हुए आते थे, और ज्योंही सन्मुख आये कि शान्ती हो गई और फिर बचनों का रस पी पी कर तृप्त होते जाते थे। सच्ची लाग सच्चा प्रेम सच्चा इश्क़ स्वामी जी महाराज के चरनों में जैसा कि चाहिये हो गया था। हक़ीक़त में अपने वक़्त में यकता* थे, और वैसीही मेहर और दया स्वामीजी महाराज की हुई कि उन्होंने निहाल कर दिया, और संतों के देश का आनन्द बख़्शा। बक़ौल शख़्से—

॥ दोहा ॥

पारस में और संत में, बड़ो अंतरो जान।
वह लोहा कंचन करे, वह करलें आप समान॥

---

*एक।

(६०) चूंकि स्वामीजी महाराज का हुक्म था कि सतसंग आगे से बढ़कर होगा, सो हक़ीक़त में उस हुक्म की तामील हुज़ूर साहब के द्वारे ख़ूबही हुई। जब हुज़ूर साहब ने पिन्शन ली और आगरे में रह कर सतसंग जारी फ़रमाया तो सतसंग इस क़दर बढ़ा कि हज़ारहा जीवों ने उपदेश लिया, और हिन्दुस्तान के हर हिस्से से, बंगाल पंजाब, सिंध, दक्खन, राजपूताना, बंबई इहाता और मध्यप्रदेश और बहुत से शहरों के आदमी हुज़ूर साहब से फ़ैज़याब हुए*। और जैसा कि हुज़ूर स्वामीजी महाराज ने, एक ख़त में बजवाब हुज़ूर साहब के प्रेमनामे† के फ़रमाया था कि अमृत का समुद्र तुम्हारे वास्ते भरा जाता है, तुम ख़ूब पियोगे और ख़ूब बाँटोगे सो वाक़ई‡ में हुज़ूर साहब ने ख़ूबही पिया और बाँटा। हुज़ूर साहब ने क़रीब दस ग्यारह बरस के आम सतसंग जारी फ़रमाया और सतसंग बहुत ज़ोर शोर के साथ होता रहा। और अब राधास्वामी दयाल की दया से जाबजा शहरों में बहुत से सतसंग जारी हैं और ख़ास कर आगरे व इलाहाबाद में मुख सत-

*उपकार करा ले गये। †पत्र। ‡ठीक ठीक।

संग होते हैं जिनमें परदेसी सतसंगी दूर दूर से आकर वक़्तन फ़वक़्तन शामिल होते हैं और राधास्वामी दयाल की महिमा का प्रकाश हो रहा है। और आगरे में स्वामीजी महाराज व हुज़ूर साहब की समाधों पर लालाजी पुत्र हुज़ूर साहब और यह दास और इलाहाबाद में पंडित जी महाराज सतसंग बराबर नियम से करते हैं।

(६१) हुज़ूर साहब ने धन की सेवा भी स्वामी जी महाराज की ऐसी की, कि सिवाय अपनी तनख़्वाह के और भी क़र्ज़ लेकर ख़र्च कर देते थे। और जिस वक़्त उमंग आरती करने या पोशाक बनवाने की होती, तो जहाँ से रुपया क़र्ज़ मिल सक्ता लाते और उमंग पूरी करते।

(६२) एक ज़िकर है कि जब राय साहब ने हुज़ूर स्वामी जी महाराज की परशादी अलानिया* लेना शुरू किया, तब बिरादरी के लोगों ने बड़ा झगड़ा फैलाया, और राय साहब को बिरादरी से ख़ारिज करने का इरादा किया। उस वक़्त स्वामी जी महाराज की ऐसी मौज हुई, कि जिस रात को चन्द ख़ास साहबान बिरादरी ने राय साहब के ख़ारिज करने

* खुलाखुली।

की तजवीज़ की थी, उसी रात की सुबह को उन साहबो में से एक साहब का लड़का जोकि उन सब में मुखिया थे, एक मेहतरानी के साथ में पकड़ा गया, और यह बात बिरादरी में आम तौर पर ज़ाहिर हो गई, उस वक्त से बिरादरी के लोगों का ऐसा मान और अहंकार टूटा, कि फिर किसी ने कान तक न हिलाया, ख़ारिज करने का तो क्या ज़िकर था।

(६३) स्वामी जी महाराज की चेलियों में से एक दो का हाल, जो कि प्रेम की हद्द के दर्जे को पहुंचीं लिखा जाता है। जब स्वामी जी महाराज सतसंग शाम को घंटे दो घंटे दिन बाक़ी रहे अपने भजन की कोठरी में से निकल कर करते थे, तो चन्द महल्ले के रहने वाले मर्द और औरत आया करते थे उन में से एक सतसंगन खिल्लोजी, और एक सतसंगन शिब्बोजी, कि जो बड़ा परमार्थी अंग रखती थीं, दोनों साथ २ आया करती थीं, और खिल्लोजी शिब्बोजी को परमारथी कारवाई में बहुत मदद देती थीं। चन्द अर्से के सतसंग के बाद बचन सुनते २ ऐसा असर शिब्बोजी पर हुआ कि प्रेम बहुत बढ़ चला, और यह नौबत हुई कि बग़ैर स्वामी जी महाराज के दर्शन के एक घड़ी भी कल

नहीं पड़ती थी और बड़ी उमंग के साथ भोग के वास्ते तरह २ के सामान और बिछाने के लिये गद्दी और पहिनने के लिये उम्दा २ वस्तर वग़ैरह प्रेम सहित बनाकर लाती थीं। यह प्रेम यहाँ तक बढ़ा कि उनको अपने देह की भी सुध न रही।

(६४) एक मर्तबे का ज़िकर है कि शिब्बो जी दर्शन की बिरह में बेकल और तड़पती हुई अपने मकान से जोकि मुहल्ला माईथान में था बिरहना* दौड़ी हुई चली आईं। तब बुक्कीजी ने जोकि उन की छोटी बहिन थीं कहा कि तू इस तौर से सरे बाज़ार क्यों चली आई इस में हमारी बड़ी बदनामी होती है तो उन्हों ने जवाब दिया कि सिवाय स्वामी जी महाराज के मुझ को तो कोई नज़र नहीं पड़ा। एक रोज़ शिब्बोजी स्वामीजी महाराज से थोड़ी दूर पर बैठी थीं, और यक्कायक अज़ख़ुद बहुत ज़ोर से रोने लगीं तब और साहबों ने जो वहाँ मौजूद थे कहा कि तुम क्यों रोती हो तब शिब्बो जी ने कहा कि स्वामी जी महाराज मुझको दर्शन नहीं देते हैं, इस पर उन्हों ने कहा कि स्वामी जी महाराज तो तुम्हारे साम्हने बैठे

* बग़ैर वस्त्र।

हुए हैं। तब उन्होंने यह जवाब दिया कि यह वह दर्शन नहीं है, कि जो मुझको दो तीन रोज़ पेश्तर अंतर में हुआ करते थे। तब स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि जा भजन पर ज़ोर दे दर्शन होंगे, तब से फिर दर्शन होने लगे। शिब्बो जी आधी रात से सुबह तक और सिपहर से शाम तक भजन करती रहती थीं, ग़रज़ की दस बारह घंटे भजन में मशग़ूल रहती थीं, और राय साहब से घंटों चरचा करके नसीहत लेती रहती थीं।

(६५) अब बुक्की जी का कि जो शिब्बो जी की छोटी बहिन थीं थोड़ा सा हाल लिखा जाता है। यह शिब्बो जी से कुछ अर्से बाद स्वामी जी महाराज के चरनों में आई थीं। जब इन्हों ने कुछ दिन सतसंग किया, और बचन स्वामी जी महाराज के सुने और वे बचन हिरदे में समा गये, तब इन के प्रेम की हालत अजीब थी, कि जब स्वामी जी महाराज बचन या अर्थ पोथियों का करते, तब इनकी आँखें सुर्ख़ अंगारा सी हो जाती थीं और आँसू बराबर टपकते रहते थे और बहुत देर तक यानी घंटों उन बचनों का नशा बना रहता था और फिर जब स्वामी जी महाराज कथा से

फ़ुर्सत पाकर हुक्का पीते थे या अभ्यास का रस लेते हुए या कथा कहने को बैठते थे तो बुक्कीजी महाराज के चरनों का अंगूठा मुंह में रक्खे हुए घंटों चरनामृत का रस लेती रहती थीं। और जब कोई मत्था टेकने के वास्ते हटाना चाहता तो वे चरन नहीं छोड़ा चाहती थीं। तब मत्था टेकने वाले से कह दिया जाता था कि तुम दूसरे चरन पर मत्था टेक लो और उस प्यासी को मत हटाओ। और वह बयान किया करती थीं कि मुझे इसमें ऐसा रस आता है कि जैसे कोई दूध पीता है। इनके भजन का यह हाल था कि आठ घंटे नौ घंटे रोज़ भजन किया करती थीं, इन को स्वामी जी महाराज के दर्शनों का पूरा आधार हो गया था और सुरत भी ऊंचे देश में पहुंचती थी। जब स्वामी जी महाराज अंतरध्यान हुए तब बुक्की जी की यह कैफ़ियत हुई कि दिन रात बेहोश पड़ी रहती थीं और दो २ दिन हाजात ज़रूरी* को भी रफ़ा करने नहीं जाती थीं और सुरत स्वामी जी महाराज के चरनों में लगी रहती थी। क़रीब डेढ़ महीने के यह हाल रहा, सबको ख़ौफ़ हुआ कि शायद इनकी

* दिसा फ़राग़त।

देह छूट जावे। तब स्वामी जी महाराज ने इनको दर्शन दिये और फ़रमाया कि जिस तरह तुम सेवा पेश्तर किया करती थीं उसी तरह से करो। और फिर उसी रोज़ से बुक्की जी भोग भी तैयार करती थीं, और मेरे पन्नी गली के मकान पर पहिले दस्तूर के माफ़िक़ पलँग बिछाती और हुक्का भरती थीं। वह पलँग अभी तक बिछा रहता है। ग़रज़ कि जिस तरह से कि पेश्तर सेवा किया करती थीं उसी तरह से कुल काम करने लगीं। और स्वामी जी महाराज उनको ध्यान के समय में प्रगट दर्शन देते थे, और कुल सेवा उसी तरह पर क़बूल फ़रमाते थे, जैसा कि अंतरध्यान होने के पेश्तर करते थे। बुक्की जी को महाराज उनके अख़ीर दम तक प्रगट रहे, यहाँ तक कि जिस किसी को जब कोई बात स्वामी जी महाराज से अर्ज़ करनी होती थी तो वे बुक्की जी के ज़रीये से दरियाफ़्त कर लिया करते थे, यानी बुक्कीजी अभ्यास के समय स्वामी जी महाराज को प्रगट करके हम-कलाम* हुआ करती थीं। इस नियाज़मन्द को भी जब कभी भीड़ के समय पर घबराहट होती

* बात चीत किया।

थी, और किसी तरह से अक़्ल काम नहीं देती थी, तब बुक्की जी के ज़रीये से स्वामी जी महाराज का हुक्म लिया करता था, और जैसा हुक्म होता था उसी के मुवाफ़िक़ बंदा कारबंद होता था और इसी तरह पर राय साहब ने भी मौज की थी कि बुक्की जी के ज़रीये से दो चार बार हुक्म हासिल किये थे।

(६६) जब बुक्की जी का देहान्त होने को था, तब एक सेवक ने कुछ गुफ़्तगू नाउम्मेदी की सी की, और अपने दिल से बड़ा अफ़सोस ज़ाहिर किया। तब बुक्की जी ने यह फ़रमाया कि—

हम नहिं मरें मरे संसारा। हमको मिला जिलावन हारा॥

और उस वक़्त हँसीं और तालियाँ बजाईं, और फिर देह छोड़ दी।

(६७) बुक्की जी और बिश्नो जी यह दोनों ख़ास कर स्वामी जी महाराज की सेवा में रहती थीं। बिश्नो जी ख़ास कर महाराज के वास्ते खाने पीने की ख़बरगीरी की सेवा में बहुत रहती थीं, और वक़्त २ की सेवा निहायत अक़्लमन्दी और होशियारी से करती थीं यहाँ तक कि कभी २ महाराज शहर के बाहर बग़ैर पेश्तर से इत्तिला करने के यकायक चले जाते थे, तो यह अपने पास सामान ख़ुराक

थोड़ा सा बँधा हुआ मौजूद रखती थीं, और जब महाराज को जाते देखा, फ़ौरन अपनी पोटली उठाई और पीछे २ दौड़ी हुई चली जाती थीं, और जहाँ स्वामी जी महाराज ठहरते वहाँ पर फ़ौरन खाना तैयार करके भोग लगवा दिया करती थीं। और कुल ख़ैरात वग़ैरह के कामों का इन्तिज़ाम निहायत उम्दा तौर पर सरंजाम देती थीं, और उनको हमेशा से आसरा और भरोसा और निश्चय महाराज के ही चरनों का रहा आया, और अब तक ऐसाही बिश्वास बना हुआ है। और उन पर अत्यंत दया स्वामी जी महाराज व हुज़ूर साहब की थी।

(६८) संवत् १९३४ में जब कि अकाल बहुत सख़्त पड़ा था और बारिश नहीं हुई थी तब बहुत से मर्द और औरतें सब गाँव सुखा के नगरे के जमा होकर स्वामी जी महाराज के पास फ़र्याद लाये और अर्ज़ की कि स्वामी जी महाराज दया करके मेह बरसाइये तब हमारा पालन होगा क्योंकि हज़ारों जीव भूख के मारे मरे जाते हैं। उस वक़्त यह सुनकर स्वामी जी महाराज ख़ामोश हो रहे लेकिन बिश्नो जी ने कहा कि तुम अपने घर को

जाओ कल मेह बरसेगा। इस पर जब वे लोग चले गये तब स्वामी जी महाराज ने बिश्नो जी से कहा कि बारिश का तो हुक्म नहीं है तूने बिला इजाज़त क्यों कह दिया कि कल मेह बरसेगा। तब बिश्नो जी ने अर्ज़ की कि स्वामी जी महाराज अब तो मेह ज़रूर बरसाना पड़ेगा क्योंकि अब तो मैं कह चुकी हूं। तब स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया, कि सब मिलकर इस चबूतरे पर बैठ कर राधास्वामी नाम की धुन लगाओ तो बारिश होगी। तब बुक्की जी व बिश्नो जी व शिब्बो जी और दीगर साधू और सतसंगियों ने मिलकर राधास्वामी नाम की धुन लगाई, तब थोड़ी सी बारिश हुई, और फिर स्वामी जी महाराज ने बिश्नो जी से फ़रमाया कि आइन्दा को तुम इस तरह किसी से मत कह दिया करो, यह तुम्हारी ख़ातिर से बारिश कराई गई है, वर्नः हुक्म मालिक का नहीं था।

(६९) मालूम होवे की बुक्की जी के छोटे भाई कन्हैया भाई के नाम से मशहूर थे। उनकी हालत भी हर अमर में निहायत उम्दा थी, यानी क़रीब क़रीब साध गती के थी। वे दिन रात अपने भजन में लगे रहते थे, और हर एक मोहताज ग़रीब के

ऊपर रहम करके उसको मदद देते थे। और पाँचो दुष्ट काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार उन्हों ने बस कर रक्खे थे, और कुल रिश्तेदारों और जात बिरादरी के लोगों से संसारी तअल्लुक़ बिल्कुल तर्क कर रक्खा था, और महाराज के ही चरनों में बाक़ी उम्र बसर करते रहे।

(७०) लाला जीवन लाल जी को कि जो महाराज के ख़ास सेवकों में से हैं उनके वालिद साहब महाराज के पास इस नीयत से लाये थे, कि महाराज उनकी नौकरी राय साहब से कहकर किसी जगह करवा दें। और इसी वजह से लाला जीवन लाल रोज़ सतसंग में आया करते थे और बचन सुना करते थे। बचनों का ऐसा असर उनके दिल पर हुआ, कि उनको संसार की तरफ़ से बहुत बैराग हो गया, यहाँ तक कि उन का दिल पिता और पुत्र और स्त्री और दीगर रिश्तेदारों और बिरादरी वालों की तरफ़ से उपराम हो गया, और उन्होंने घर पर जाना तर्क कर दिया, और रात दिन स्वामी जी महाराज के मकान पर रह कर सतसंग और सेवा करते रहे। और तैयारी मकानात स्वामी बाग़ और राधा बाग़ में निहायत

जाँफ़िशानी* के साथ मशगूल रहते थे और अक्सर दो २ वार शहर से वाग़ को वास्ते दर्शन और सतसंग वग़ैरह के आते थे। पंदरह वीस वरस तक स्वामी जी महाराज के चरनों में वरावर रहे और फिर हुज़ूर साहव के पास या मकान पर अव तक रहते हैं, यहाँ तक कि अपना सरवस परमार्थ की भेट कर दिया। यह दोनों महाराजों के प्यारे ख़ास और दयापात्र रहे हैं।

(७१) एक मर्तवे का ज़िकर है कि एक साधू आनंदगिरी चंद अर्से तक आगरे में रहा था, और उसने स्वामी जी महाराज की महिमा और तारीफ़ सुन कर वहुत ईर्षा करना शुरू किया, तो उसने चौवे सुदर्शन दास कोतवाल शहर से मेल मिलाप कर के यह चाहा कि स्वामी जी महाराज के सतसंग में ख़लल डालें, तो उसने कोतवाल साहव मौसूफ़ को वहका दिया, कि स्वामी जी महाराज के यहाँ कोई मर्द या औरत सतसंग में न जाने पावे। तव कोतवाल ने मकान पर आकर स्वामी जी महाराज से अर्ज़ किया कि आप किसी मर्द या औरत को मकान पर न आने देवें। तव स्वामीजी

* मेहनत।

महाराज ने फ़रमाया कि हम किसी को मना नहीं कर सक्ते, तुमको इख़तियार है जो चाहो सो बन्दोबस्त करो। चुनाँचि कोतवाल शहर ने दो तीन रोज़ तक सब का आना बन्द किया, यानी अपना सिपाही दरवाज़े पर बैठा दिया कि कोई आने न पावे। तो उन सतसंगी और सतसंगनों को कि जो बग़ैर दर्शन और चरनामृत परशादी के खाना नहीं खाते थे, और एक दो रोज़ तक जब खाना नहीं खाया, बड़ी बेचैनी हुई, तब वे लोग बालाई २ पड़ोस के मकानों की छतों पर होकर, महाराज के दर्शनों को आते थे, और दर्शन कर के चरनामृत परशादी लेकर वापस जाते थे। यह आमदरफ़ दो तीन रोज़ तक बन्द रही, फिर ऐसी मौज स्वामीजी महाराज ने फ़रमाई कि बाद उस के कोतवाल पर किसी मुक़द्दमे की ऐसी आफ़त पड़ी, कि उसने अपने सिपाही को स्वामी जी महाराज के मकान के दरवाज़े पर बैठने से मना किया, और सतसंग बदस्तूर जारी हो गया। और साधू आनंदगिरी से ऐसा निहायत बेजा काम सरज़द हुआ, कि उसको मुफ़स्सिल लिखना मुनासिब नहीं मालूम होता है, कि उस बेजा कार्रवाई की वजह से ऐसी

शरमिंदगी हुई, और लोगों को उस की तरफ़ ऐसा अभाव आगया, कि शरमिंदगी की वजह से वह शहर आगरा छोड़ कर किसी तरफ़ को चला गया और फिर आगरे में कभी नहीं आया।

(७२) वाज़ह हो कि जब स्वामी जी महाराज का सतसंग बहुत ज़्यादे तरक़्क़ी पर हुआ तब उन की बिरादरी वालों ने भी बहुत से झगड़े और बखेड़े फैलाये, और एक मरतबे कुल ने जमा होकर यह तजवीज़ करी कि स्वामी जी महाराज के ख़ान्दान को बिरादरी से ख़ारिज करदें और जो २ मर्द व औतार जो कि वहाँ सतसंग में जाते हैं, उन सब को भी बिरादरी से अलहदा कर दें, और इस अमर में बहुत सी कोशिशें जितनी कि उनकी ताक़त थी करीं, और बहुत अरसे तक झगड़े फैलाते रहे, मगर कुछ उनकी पेश नहीं गई, इस वजह से कि क़रीब २ कुल बिरादरी के मर्द और औरत कि जिन को अपने परलोक के सम्हाल की चाह थी सतसंग में शामिल थे, यहाँ तक कि किसी का बाप किसी का चचा किसी का भाई किसी का लड़का किसी की माँ किसी की चची किसी की भतीजी किसी की बहिन वग़ैरह वग़ैरह। ग़रज़ यह कि कोई न

कोई रिश्तेदार हर एक शख़्स का शामिल सतसंग था। यह झगड़ा कई बरस तक उन लोगों ने जारी रक्खा, मगर जब उनसे कुछ न हो सका और तकलीफ़ें शादी व ग़मी वग़ैरह में बहुत होने लगीं तब सब पस्त हिम्मत हो गये तब खुद यह दरख़्वास्त करी कि एक रोज़ एक जगह पर सब अहले बिरादरी जमा होवें और स्वामी जी महाराज भी तशरीफ़ लावें और उन से हर पहलू पर बहस करके सतसंग में औरतों का आना जाना क़तई तौर पर मैाक़ूफ़ करा दिया जावे तब यह झगड़ा तै हो जावेगा। चुनाँचे एक दिन मुक़र्रर हुआ और लाला निहालचंद साहिब के मकान पर ख़ास २ लोग अहले बिरादरी के और ब्राह्मन दस बजे दिन के जमा हुए, और चाहा कि स्वामी जी महाराज तशरीफ़ लावें, उस पर स्वामीजी महाराज ने इस दास परतापसिंह को हुक्म दिया कि हमारी एवज़ी तू जा। चूंकि बंदे पर हुक्म की तामील करने का फ़र्ज़ था मैंने हुक्म को बसरो चश्म क़ुबूल किया मगर मेरा दिल डरता था कि इतने लोगों में जो निंदक और बिरोधी इस मत के हैं उन सब के मुक़ाबिले में कैसे गुफ़्तगू कर सकूंगा, क्योंकि मुझ को कभी

इतने हुजूम में बहस करने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ था, तो मैंने स्वामीजी महाराज से अरज़ किया कि मैं ऐसे विरोधी लोगों के मुक़ाबिले में कैसे पेश ले जाऊँगा, तब महाराज ने फ़रमाया कि तू शौक़ से जा हम सब सम्हाल कर लेंगे। फिर तो मुझ को खूब हिम्मत हुई और मैं स्वामीजी महाराज के सन्मुख से उठ कर मकान मुक़र्ररा पर गया तो देखा कि लोग जमा हैं, मैं भी वहाँ जाकर बैठ गया और मैंने कहा कि जो कुछ जिन साहिबों को फ़रमाना है वह बयान करें। तब क़रीब दो घंटे के गुफ़्तगू रही जिस साहिब ने एक बार गुफ़्तगू की या कोई सवाल किया, जवाब बासवाब पाने पर बन्द हो गया और फिर दोबारा कुछ न कह सका। जब दस पाँच साहिबों ने जवाब माकूल पाये खामोश हो गये तब लाला जगनप्रसाद और लाला हरद्वारनाथ कि जो दोनों साहिब स्वामीजी महाराज के मोतक़िद थे उन्होंने आहिस्ता २ कई साहिबों से कहा कि अब बोलो जो कुछ कहना है सो अब कह लो, मगर फिर किसी से कुछ न कहा गया और आखिर को यह सब कहने लगे कि हक़ीक़त में स्वामी

जी महाराज बड़े महात्मा हैं और लोग बिफ़ायदा निन्दा कर २ अपने सर पर अज़ाब कमाते हैं।

(७३) वाज़ह हो कि एक रोज़ स्वामीजी महाराज सिपहर के वक्त़ वास्ते हवाख़ोरी के जंगल की तरफ़ खेतों में गये हुए थे और कितने एक साधू व सतसंगी व सतसंगनें हमराह गये थे वहाँ पर और ज़िक्र में यह भी ज़िक्र आया कि स्वामी जी महाराज हाथी पर सवार हों और हम सब लोग आगे आगे सवारी के दौड़ते चलें, इस पर स्वामीजी महाराज ने भी फ़रमाया कि हम और सब सवारियाँ तो कर चुके हैं मगर हाथी की सवारी का मौक़ा अभी तक नहीं हुआ है। चुनाँचे यह गुफ़्तगू हो रही थी कि सामने की तरफ़ से एक हाथी मय हाथीवान के नमूदार हुआ तब तो सब सतसंगियों ने अरज़ किया कि स्वामीजी महाराज हाथी मौजूद है, चुनाँचे थोड़ी देर तक महाराज हाथी पर सवार हुए और फिर महाराज ने हाथीवान को इनाम दे कर रुख़सत कर दिया।

(७४) मालूम हो कि यह मकान कि जो नये मकान के नाम से मशहूर है और जो ख़ास करके वास्ते सतसंग के बनवाया जाता था उस में एक नीम

का दरख़्त था और वह ऐसे मौक़े पर था कि बड़े कमरे के सामने की दीवार के बीच आसार में पड़ता था तो बग़ैर उस के उखाड़े हुए वह दीवार सीधी नहीं बन सकती थी और अक्सर लोग यह कहते थे कि हरे दरख़्त को तो कटवाना मुना-सिब नहीं है। चुनाँचे स्वामीजी महाराज से भी यह ज़िक्र किया गया तो स्वामीजी महाराज ने यह फ़रमाया कि हम चलकर देखेंगे, और दूसरे रोज़ स्वामीजी महाराज नये मकान में तशरीफ़ लाये, उसी तौर पर कि जैसे हफ़्ते अशरे बाद मेरी यानी लाला परतापसिंह की दरख़्वास्त पर हमेशा आया करते थे और पैसे और शीरीनी मदद वालों कारीगरों को तक़सीम कर जाते थे तशरीफ़ लाये और उस नीम पर हार फूल चढ़ाकर रहने के मकान में तशरीफ़ ले गये, तब मौज ऐसी हुई कि वह दरख़्त उसी रोज़ से खुद ब खुद सूखने लगा और थोड़े अरसे में बिलकुल सूख गया, तब वहाँ से उखड़वा दिया गया।

(७५) एक मरतबे का ज़िक्र है कि अज़ीज़ सुद-र्शनसिंह हमारे छोटे लड़के ने अपना इरादा विलायत जाने का वास्ते तहसील इल्म के किया

था इस वजह से कि जब वहाँ से पढ़कर आवेंगे तो उम्दा नौकरी मिलेगी, और इसी वास्ते कई बड़े अंगरेज़ों से बज़रीए राय मथुरादास तहसील़-दार आगरा के मुलाक़ात की और विलायत का हाल ख़रच वग़ैरह का सब दरियाफ़्त किया। उस वक़्त में जो कोई कि विलायत जाने का इरादा किया करता था तो अँगरेज़ बहुत ख़ुश हुआ करते थे तो जिन अंगरेज़ों से कि इन्होंने मुलाक़ात की थी उन्हों ने इनके इरादे को ख़ूब पक्का कर दिया, तो इन्हों ने इरादा मुसम्मम जाने का किया और फिर यह इरादा अपना हम लोगों पर ज़ाहिर किया और यह हाल सब स्वामीजी महाराज से कहा गया तब स्वामीजी महाराज ने सुदर्शनसिंह से फ़रमाया कि जिस मतलब से तुम विलायत जाने का इरादा करते हो वह तरक़्क़ी और बिहबूदी तुम्हारी यहीं पर होगी, तुम इस का यक़ीन लाओ इस पर उन्हों ने अपना इरादा मंसूख़ कर दिया। उस हुक्म का ज़हूर अब साफ़ ज़ाहिर है, और यह भी फ़रमाया था कि तुम्हारी दीन दुनियाँ दोनों की सम्हाल यहाँ पर सब अच्छी तरह से होती रहेगी, यानी परमारथ और दुनियाँ दोनों की

बख़्शिश तुम को होगी, चुनाँचे उस परमार्थी और दुनयवी बख़्शिश का हाल अब ज़ाहिर है बल्कि शुरूही से कि जब छोटी उम्र थी तबही से परमार्थ की तरफ़ तवज्जह थी कि जब वे इलाहाबाद में वास्ते तहसील इल्म के गये हुए थे तो अपने रोज़-मर्रे के हालात जैसे कि मन में तरंगें उठती थीं वह अपने दिल का सब सच्चा २ हाल लिखकर स्वामीजी महाराज के चरनों में भेजा करते थे, और जैसा कि स्वामीजी महाराज हुक्म भेजते थे उसकी तामील किया करते थे। उस वक़्त में एक मरतबे स्वामीजी महाराज रोज़नामचा सुनकर बहुत खुश हुए और यह फ़रमाया था कि इस लड़के पर दया की जावेगी, चुनाँचे वह हालत अब ज़ाहिर है।

(७८) वाज़ह हो कि जब स्वामीजी महाराज का आम सतसंग हुआ करता था, और चौबीस पल्टन के सिपाही वग़ैरह कि जिनको स्वामीजी महाराज के चरनों में बहुत बिरह और प्रेम पैदा हो गया था कि जिन की ऐसी हालत थी कि बग़ैर दर्शन करे चैन नहीं पड़ता था तो अक्सर बग़ैर पूछे अपने अफ़सर के चले आया करते थे तो ऐसी

मौज हुआ करती थी कि उन लोगों की ग़ैरहाज़िरी कभी नहीं लिखी गई, हाज़िरी लेने वाला उनका नाम पुकारना भूल जाया करता था।

(७७) पेश्तर स्वामी जी महाराज शहर में तशरीफ़ रखते थे, और ख़ैरात बहुत ज़्यादे होती थी, तब हर वक़्त मंगता मकान को घेरे रहा करते थे। जब इसकी ज़्यादती हुई और हर वक़्त मंगताओं की वजह से तकलीफ़ ज़्यादे होने लगी और ख़ास कर सतसंग में बहुत नुक़सान और ख़लल वाक़े होने लगा, तब यह तजवीज़ हुई कि शहर के बाहर रहना चाहिये। और दूसरी और मौज से भी बाग़ बनवाने का इरादा हुआ। तब स्वामी-जी महाराज ने सुखपाल पर सवार होकर, कि जिसको साधू उठाया करते थे, शहर के बाहर तशरीफ़ ले जाना शुरू किया, और शहर के गिर्द मुख़्तलिफ़ मुक़ामात का मुलाहिज़ा फ़रमाया। तब एक मुक़ाम शहर के बाहर क़रीब तीन मील के फ़ासिले पर पसंद फ़रमाया, और उस जगह बाग़ की बुनियाद डाली गई, और बाग़ तैयार हुआ, और महाराज वहाँ रहते रहे और भजन व सतसंग वग़ैरह सब बाग़ में करते रहे।

(७८) एक मर्तबे स्वामीजी महाराज बाग़ में सुबह के वक़्त टहल रहेथे, और दो चार साधू सतसंगी भी महाराज के हमराह थे तब चेतन-दास साधू ने स्वामीजी महाराज से दरमियान के ख़ाली मैदान की तरफ़ इशारा करके अर्ज़ की कि इस बीच के मैदान में कि जहाँ पर यह ऊँची ज़मीन है इस जगह पर आप के रहने के वास्ते कोठी तैयार होनी चाहिये, यह जगह इस के वास्ते बहुत उम्दा मौक़े की है। इस पर हुज़ूर दीनदयाल परमपुरुष पूरन धनी स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि इस जगह गुरुद्वारा बनेगा। इस अमर को सुनकर लोग ख़ामोश हो गये। इस पेशींगोई को कोई न समझा कि क्या मतलब इस फ़रमाने से था। मगर जब महाराज अंतरध्यान हुए, और महाराज की समाध वहाँ पर तैयार होगई तब सब को ख़याल आया कि स्वामी जी महाराज का मतलब लफ़्ज़ गुरुद्वारा के कहने का यह था, कि वहाँ पर समाध बनेगी। सिवाय इसके कई दीगर इमारतें इस बाग़ में, यानी भजन घर और सतसंग घर और भंडार घर, और साधुओं के रहने के वास्ते बहुत सी कोठरियाँ वग़ैरह वग़ैरह बनी हुई हैं।

बहुतसी इन में से स्वामीजी महाराज ने अपने सामने ही बना ली थीं ॥

(७९) बाग़ में क़रीब चालीस साधुओं के रहते थे उनकी गुज़र के वास्ते माकूल इन्तज़ाम खाने पीने और दीगर ज़रूरियात का कर दिया गया था और चंद साधू अब भी रहते हैं उनके वास्ते भी वही सूरत जारी है। वे सब लोग अपने भजन और सतसंगत में लगे रहते हैं ॥

(८०) एक वक्त का ज़िकर है कि जब स्वामीबाग़ तैयार हुआ, तो वहाँ के रहने वाले साधुओं में से एक साधू हंसदास कि जिन को शौक़ जंगल में फिरने और एकान्त में रहने का ज़ियादा था, अक्सर जमना की तरफ़ चले जाया करते थे। एक रोज़ इत्तिफ़ाक़ से उस जगह पर आ निकले जहाँ राधा बाग़ की कुइया है वहाँ मूंज बहुत खड़ी थी और कुइया के चारों तरफ़ मूंज का साया था, तब उन्होंने इरादा किया कि यहाँ अपना आसन जमावें। तो एक रोज़ स्वामीजी महाराज को उस तरफ़ हवा खिलाने ले गये और कुइया दिखलाई और कहा कि मेरा इरादा यहाँ रहने का है। वह कुइया टूटी हुई पड़ी थी और मलबे से अटी हुई थी। हंसदास साधू ने अर्ज़

की कि अगर हुक्म हो तो इसमें पानी हो सक्ता है। यह सुन कर स्वामीजी महाराज ख़ामोश हो रहे। आठ दस महीने बाद जब एक रोज़ स्वामी जी महाराज साधुओं को लड्डू लुटा रहे थे, तब हंसदास जी को बुलाकर पूछा कि तुमने राधा बाग़ की कुछ मदद की, तब उन्होंने कहा कि महाराज मुझे नहीं मालूम कि राधा बाग़ कहाँ है, तब फ़रमाया कि उस जगह पर जहाँ तुमने हम को कुइया दिखलाई थी राधा बाग़ बनेगा, और तुम जाकर वहाँ अपना आसन डाल दो। चुनाँचि हंसदास जी ने फ़ौरन हुक्म की तामील की और वहाँ आसन जमा दिया, और दो चार रोज़ में कुइया को ऐसा दुरुस्त कर लिया कि आदमक़द उस में पानी हो गया। इस अर्से में अकाल पड़ गया, और लोगों ने अपने अपने पोहे और जानवर छोड़ दिये। तब हंसदास जी ने पानी की सेवा इख़्तियार की, और उस कुइया से इतना काम निकला कि हंसदास जी खुद दो दो सौ तीन तीन सौ पोहों को रोज़ उस कुइया से पानी निकाल कर पिलाते रहे, बादहू वहाँ पर बाग़ लगाने की तजवीज़ हुई॥

(८१) यह मुक़ाम बहुत रेतीली जगह में वाक़े है,

इस के इर्द गिर्द कुछ दूर तक सिवाय चन्द जंगली काँटेदार दरख़्तों और पूलों और सरपतों के और दरख़्त नहीं हैं और यह ज़मीन ऊसर है। एक रईस ने बहुत कोशिश की कि इस ज़मीन में बाग़ लगवावें और रुपया भी ख़र्च किया, मगर उनकी सब कोशिश रायगाँ हुई॥

(८२) इसी बाइस से चन्द लोगों ने स्वामी जी महाराज से भी अर्ज़ की कि यह ज़मीन ख़राब है दरख़्त न लगेंगे। इस पर महाराज ने फ़रमाया कि नहीं राधा बाग़ तो इसी जगह पर बनेगा। फिर बाग़ की बुनियाद डाली गई। स्वामी जी महाराज कभी२ सुखपाल में बैठ कर राधा बाग़ जाया करते थे, और दीगर साधुवान और सतसंगी भी जो महाराज के हमराह जाया करते थे बाग़ की तैयरी में अपने तन से मदद देते थे। ग़रज़ यह कि अब उसी जगह पर जोकि ऊसर थी, एक बड़ा बाग़ बहुत घने दरख़्तों का तैयार है और यही राधा बाग़ कहलाता है। यह बाग़ स्वामी बाग़ से आगे उसी सिम्त* में क़रीब एक मील के फ़ासिले पर वाक़े है, इस बाग़ में भी राधाजी महाराज की समाध बनी हुई है॥

*तरफ़।

(८३) जब कि स्वामी बाग़ में अक़ामत बन रहे थे, और सब साध सतसंगी मौजूद थे, उस वक़्त में स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया था कि हमारे दिल में ऐसा आता है कि यहाँ पर बड़ी २ भट्ठियाँ बनें और बड़े २ कढ़ाये चढ़ाये जावें, और मालपूए और पूर कचौरी और मिठाई वग़ैरह ख़ूब तैयार होवें, औ तमाम इर्द गिर्द के गाँवों के लोगों को ख़ूब खान खिलाया जावे, चुनाँचि वह मौज उस वक़्त से अब तक ज़हूर में आ रही है।

(८४) एक सतसंगी कि जिसका नाम जानकी प्रसाद था बहुत प्रेमी था, उसको स्वामीजी महाराज के दर्शन नेत्र खुले हुए भजन के वक़्त हुआ करते थे। मगर अंतरध्यान होने के एक साल पेश्तर से दर्शन नेत्र बन्द हो कर होने लगे। वह इलाहाबाद में था उसने सुदर्शनसिंह से कहा कि तुम हुजूर साहब से इसकी वजह दरियाफ़्त करो। जब सुदर्शनसिंह ने हुजूर साहब से दरियाफ़्त किया, तो उन्होंने फ़रमाया कि यह बात स्वामीजी महाराज से ही दरियाफ़्त करो। फिर रात को कि जिसके सवेरे वह अंतरध्यान हुए जानकी प्रसाद ने स्वामीजी महाराज से दरियाफ़्त करके सुदर्शनसिंह से कहा कि मैंने स्वामीजी महा-

राज से वह बात दरियाफ़्त की थी, उन्होंने फ़रमाया कि नेत्र बंद करके दर्शन देने से यह मतलब था कि हम अब कल सुबह अंतरध्यान होने वाले हैं तुम को इय अमर की इत्तिला दी गई थी।

(८५) हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने दो बरस पेश्तर अंतरध्यान होने से, हुज़ूर साहब से फ़रमाया था तब उन्होंने बहुत प्रार्थना की तब मंज़ूर किया गया था कि हुज़ूर साहब से फ़रमाया कि बाद पाँच रोज़ के हम देह छोड़ेंगे, इस पर हुज़ूर साहब सुस्त हुए और अफ़सोस करने लगे, और फिर अर्ज़ किया कि अभी ऐसी मौज न फ़रमाई जावे तो सब जीवों पर बड़ी दया होगी। इस पर हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि यह देह जरजरी होगई है इसका रखना अब मंज़ूर नहीं है। फिर राय साहब ने कई बार यह प्रार्थना करी कि अभी कुछ दिन तो और दया होवे इस पर महाराज ने पन्द्रह रोज़ के वास्ते देह क़ायम रखने को क़बूल फ़रमाया, और उसी वक़्त यह भी हुक्म दिया कि आइन्दा को फिर ऐसी दरख़्वास्त न करना क्योंकि अगर इनकार करते हैं तो हमारा दिल इनकार करने को भी गवारा नहीं करता, और

इस देह का रखना भी अब किसी तरह मुनासिब नहीं मालूम होता है और फिर १५ रोज़ बाद अंतरध्यान हुए।

(८६) मालूम होवे कि वाक़िआ मुफ़स्सले ज़ैल हुजूर स्वामी जी महाराज के अंतरध्यान होने के बाद का है। हुजूर स्वामी जी महाराज बुक्की जी को बाद अंतरध्यान होने के प्रत्यक्ष नज़र आते थे। एक रोज़ बुक्की जी ने गुरद्वारे में सुबह के छः बजे के क़रीब हुजूर स्वामी जी महाराज से अर्ज़ की कि सब साधों पर दया करो तब हुजूर स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि दया किस पर की जावे, कोई दया का लेने वाला हो तो दया की जावे, 'देखो सब साधू बाग़ में पड़े सो रहे हैं, और सिर्फ़ बिमलदास और दयालदास भजन में बैठे हैं, सोते हुए पर क्या दया की जावे। उसी रोज़ शाम को जब भारासिंह और परमानंद साधू पानी लेकर बाग़ से शहर में पहुंचे, तब बुक्की जी ने भारासिंह से पूछा कि आज छः बजे भजन में कौन २ साधू बैठे थे, तब भारासिंह ने कहा कि हमको मालूम नहीं है हम तो सोते थे। तब बुक्की जी ने कहा, कि आज स्वामी जी महाराज फ़रमाते थे कि सिर्फ़ दो साधू बिमल-

दास और दयालदास छः बजे भजन में बैठे हैं, और तुम कहती हो कि दया करो, दया किस पर की जावे सब तो सो रहे हैं। जब रात का सतसंग शुरू हुआ तब साधुओं से दरियाफ़्त किया गया, कि आज भजन में कौन कौन छः बजे बैठे थे। तो सिर्फ़ विमलदास और दयालदास ने कहा कि हम बैठे थे, और सन्मुखदास बड़े महंत ने कहा कि हम सात बजे बैठे थे। और इसी तरह किसी ने कोई वक़्त बतलाया और किसी ने कोई वक़्त कहा, मगर छः बजे के बैठने वालों में से सिर्फ़ दो ही निकले।

(८७) एक मर्तबे एक पंडित जी साहब काशी जी से चर्चा करने के वास्ते आगरे में आये थे और स्वामीजी महाराज से मज़हब के बारे में चर्चा शुरू हुई, और इस क़दर तवालत को पहुंची कि सात दिन व रात जारी रही, सिर्फ़ ज़रूरियात से फ़ारिग़ होने के लिये बन्द होती थी। मुबाहिसा हर पहलू मज़हब पर हुआ, फिर स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि अब ग्रंथ साहब का पाठ होगा, आप अर्थ फ़रमाइये, तब पंडित जी साहब ने कहा कि नहीं आप ही फ़रमाइये। तब स्वामीजी महाराज ने ऐसे अर्थ अपनी शीरीं ज़बान से फ़रमाये, कि पंडित जी

हैरत व आश्चर्ज में आ गये, और कहने लगे कि ऐसे गूढ़ अर्थ तो हमने कभी नहीं सुने थे। और फिर ऐसे मौतक़िद हुए कि स्वामी जी महाराज से उपदेश राधास्वामी मत का लिया, और कुछ अर्से तक सतसंग व सेवा करते रहे।

(८८) स्वामी जी महाराज ने जो बानी तसनीफ़ की है, वह आम फ़हम और सलीस ज़बान में संत मत के ऊँचे से ऊँचे ख़यालात को बयान करती है। ज़ाहिर है कि संतमत सब से आला* दर्जे का मत है, और उसमें सब से ऊँचे धाम की महिमा की गई है। स्वामी जी महाराज ने सत्त लोक और राधास्वामी धाम की महिमा का इज़हार ऐसी आसान इबारत में किया है, कि जिस को नाख़्वांदा† मर्द और औरत बख़ूबी समझ सक्ते हैं, और मामूली मतलब और मानी समझने के लिये किसी के तशरीह‡ और अर्थ की ज़रूरत नहीं है। सब संतो की जो कि कलियुग में प्रघट हुए यह कोशिश रही कि अपनी बानी आसान और वक़्त की बोल चाल की ज़बान में तसनीफ़ करें, लिहाज़ा उन्होंने हिन्दी भाषा को पसंद किया जैसा कि कबीर साहब ने फ़रमाया है—

* ऊँचे। † बेपढ़े। ‡ तफ़सील।

दोहा

संस्किरत है कूप जल भाषा बहता नीर।
भाषा सतगुर सहित है सलमत गहिर गंभीर॥

इस वजह से स्वामी जी महाराज ने बानी बहुत ही आसान इबारत में बयान की है।

(८९) स्वामी जी महाराज को एक बार बहुत सी भीड़ भाड़ से नफ़रत हुई, और एकान्त रहना कुछ अर्से के वास्ते पसन्द किया, और कुछ सेवकों की बिरह का इम्तिहान करना भी मंजूर था। तब यह हुक्म दिया कि हमारे पास बग़ैर इजाज़त के कोई न आवे, मगर हुजूर साहब को बड़ी तड़प उठी, और बग़ैर दर्शन किये कल न पड़ी। तब पड़ोस के मकान में होकर वे स्वामी जी महाराज के दर्शनों के वास्ते जा पहुंचे। जब स्वामी जी महाराज ने इन को देखा तो फ़रमाया कि बग़ैर इजाज़त तुम क्यों आये तुमने हमारा हुक्म क्यों नहीं माना। तब उन्होंने अर्ज़ की कि सिर्फ़ दर्शनों के वास्ते आया हूं, तब स्वामी जी महाराज ने एक खड़ाऊँ मारी और कहा कि चले जाओ। तब राय साहब ने फ़ौरन खड़े होकर और हाथ जोड़ कर मत्था टेका और क़सूर की माफ़ी चाही और अर्ज़ किया कि आइन्दा ऐसी

हुक्म-अदूली हरगिज़ नहीं होगी तब क़सूर माफ़ फ़रमाया और दया का हाथ सिर पर रक्खा। इस बरतावे में सम्पूरन गुरमुख अंग प्रघट दीखता है, क्योंकि बग़ैर सच्चे और पूरे गुरुमुख के किसी की ताक़त नहीं कि इस तौर का बरतावा कर सके। और दुनियादारों का यह हाल है कि अगर उन का क़सूर बयान करो तो नाराज़ होते हैं बल्कि सतसंग में आना भी बंद कर देते हैं और इसी वजह से वे ख़ाली रहते हैं।

(९०) एक मर्तबे का ज़िकर है कि साधू कँवल-दास ब्राह्मण और भजनदास से जो कि जमना किनारे के कुंए से पानी ठेले में भरकर स्वामीजी महाराज के वास्ते लाया करते थे इत्तिफ़ाक़न घट-वालों से परशादी खाने पर तकरार हुई कि स्वामी जी महाराज सबको परशादी खिलाते हैं इस वजह से हम इस कुंए से तुम को पानी नहीं भरने देंगे। तब साधुओं ने कहा कि यह कुंआ तुम्हारा नहीं है जो तुम मना करते हो तुमको क्या इख़्तियार है कि हम को पानी न लेने दो कुंआ इसी वास्ते होता है कि जो चाहे सो पानी भर ले जावे, और कहा कि परशादी हम खाते हैं तुमसे तो नहीं कहते

कि तुम खाओ। और हम तो पानी भर कर ले जावेंगे। इस पर वह आमादा लड़ाई के लिये हुए और सख़्त कलामी करने लगे, तब कँवलदास साधू ने लाचार होकर, एक थप्पड़ एक घटवाले के मारा। इस पर और लोग जमा हो गये और घटवाले से कहा कि तुम्हारा फ़िसाद करना ग़लत है। दोनों साधू फिर पानी ठेले में भर कर ले आये, और यह हाल सब स्वामीजी महाराज से बयान किया, और कँवलदास साधू बहुत गुस्से में भरा हुआ था उस का इरादा घटवालों से झगड़ा करने का फिर था। तब स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि साधुओं का काम झगड़ा करने का नहीं है बल्कि क्षमा और बरदाश्त करने का है, मगर उस को शान्ती नहीं हुई। उस के दिल में कुछ अहंकार इस अमर का ज़ियादा था कि स्वामीजी महाराज के भाई और हुजूर साहब और और सेवक मुअज़्ज़िज़ ओहदों पर हैं और क़रीब बारह तेरह सौ रुपये माहवारी की आमदनी है, और भतीजे उन के आगरे के तहसीलदार हैं, तो इस वजह से हम घटवालों को ख़ूब ज़लील करके सज़ा दिलावेंगे। तब स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि तुम यहाँ

किस वास्ते आये हो, तुम साध बनने आये हो या अहंकार और क्रोध को काम में लाकर ग़रीबों को दुख देने के वास्ते आये हो, और यह दोहा फ़रमाया--

॥ दोहा ॥

भलयन से भला करन यह जग का ब्योहार।
बुरयन से भला करन ते बिरले संसार॥

और यह ज़िकर महाराज तुलसी साहब का कँवल-दास वग़ैरह को सुनाया, कि एक मर्तबे महाराज तुलसी साहब जिन्हों ने कि मूर्त्ति पूजा वग़ैरह की पोल ख़ूब निकाली है, शहर हाथरस में किसी सेवक के मकान से बाज़ार में होकर जाते थे। चूंकि वहाँ के बाशिन्दे बवजह खंडन मूर्त्ति पूजा वग़ैरह के ईर्षा रखते थे, तो वे लोग और बहुत से लड़के जमा होकर तुलसी साहब के पीछे २ तालियाँ बजाते हुए और बकवाद करते हुए और कंकड़ फेंकते हुए चले आते थे, कि इत्तिफ़ाक़न एक दो कंकड़ महाराज के क़रीब आनकर पड़े, तब महा-राज गिरधारी दासजी जो कि उनके ख़ास प्रेमी चेले थे, और बराबर २ चले जाते थे उन को निहा-यत गुस्सा आया और उनकी लाल आँखें हो गईं और उन्होंने चाहा कि वे लौटकर मुक़ाबला करें।

उसी वक्त तुलसी साहब महाराज ने गिरधारी दास जी को खूब डाँटा और यह फ़रमाया कि दुनिया-दारों ने भक्तों और फ़ुक़राओं के साथ बड़ी सख़्तियाँ की हैं यहाँ तक कि खाल इँचवाई है और गर्दन काट ली है, और उन्हों ने एवज़ लेना नहीं चाहा, तो यह क्या साधपन है कि इतनी सी ही करतूत में ऐसे गुस्से में आगये, ख़बरदार और होशियार हो। यह सुन कर महाराज गिरधारी दास जी को शान्ती हो गई और अपने मकान को चले आये। जब यह बचन कँवलदास साधू को सुनाया गया, तब उस का भी गुस्सा जाता रहा, और स्वामी जी महाराज के चरनों में उस ने मत्था टेका और अर्ज़ की कि जैसा हुक्म होवे वैसा किया जावे तब महाराज ने फ़रमाया कि तुम दोनों दो दो रुपये ले जाओ, और जिन घटवालों से कि फ़िसाद हुआ है उनकी नज़र करो और उनके क़दमों पर मत्था टेको और क़सूर माफ़ करवाओ, चुनाँचि उन्हों ने ऐसाही किया तब तो घटवाले बहुत खुश हुए और कहा कि हम स्वामी जी महाराज के दर्शन ज़रूर करेंगे, और रात के सत-संग में आवेंगे, चुनाँचि ऐसाही हुआ कि वे सतसंग

में आये, और बड़ी दीनता से अर्ज़ किया कि महाराज हम क़सूरवार हैं और आप पूरे संत सतगुरु हैं, हमारा क़सूर माफ़ होवे, तब उनका क़सूर माफ़ किया गया। और चूंकि परशादी लेने पर इस क़दर बखेड़ा हुआ था, लिहाज़ा परशादी का हाल मुख़्तसर तौर पर यहाँ बयान करना लाज़िम आया।

अब ज़ाहिर हो कि यह परशादी की रसम आम मज़हबों में और ख़ास कर हिन्दुओं में हर जगह पर क़दीम से जारी है, क्योंकि हर एक मंदिर में देखने में आता है, कि जब खाना तैयार होता है, तो खानेवाले पेश्तर अपने मत के आचार्य्य की मूरत के सामने भोग लगाते हैं, तब वह परशाद आप भी खाते हैं, और औरों को भी बाँटते हैं। तो इससे ज़ाहिर होता है कि जब वे आचार्य्य या गुरू प्रत्यक्ष मौजूद होंगे, तब पहिले वे परशाद पा लेते होंगे तब पीछे वह परशादी तक़सीम की जाती होगी। मालूम होवे कि जगन्नाथ जी में कुल खाना दाल रोटी व कढ़ी व चावल व खिचड़ी वग़ैरह २ सब एक जगह पर तैयार होता है, और फिर वह सब खाना जगन्नाथ जी के मंदिर में रक्खा जाता है, और भोग लगाया जाता है, और जब भोग लग

जाता है, तब सब जात के जात्री हिन्दू एक जगह बैठ करके आपस में मिल करके खाते हैं। और उसी भाेग के सामान को मंदिर की दूकानों पर फ़रोख़्त करने के वास्ते दूकानदारों को दिया जाता है, और बहुत से जात्री दूकानों पर जाकर, पहिले ख़रीदने के हर एक चीज़ को अपने हाथ से हर बरतन में से लेकर, उसी जूंठे हाथ से चखते चले ज़ाते हैं, बल्कि बाज़े पंडा दूकानदार कभी २ अपने हाथ से भी उस परशाद में से लेकर जात्री के मुंह में चखा देते हैं और कहते हैं कि यह अच्छा है इसको ख़रीदो और जात्री उसको ख़रीद कर खाते हैं। अब ग़ौर करो कि वह परशाद बीसों आदमियों का जूंठा हो गया उसको बड़ी ख़ुशी और भाव से ग्रहण करते हैं और उससे अपनी नजात समझते हैं। तो इस बयान मज़कूरै बाला से ज़ाहिर हुआ कि परशादी की रसम वहाँ पर भी जारी है और जो कुछ कि परशाद जूंठा जात्रियों के खाने से बच रहता है वह सब पंडे अपने घर को ले जाते हैं और अपने कुनवे को खिलाते हैं। और वही सब का जूंठा परशाद जात्री लोग अपने २ घर को ले जाते हैं और वहाँ अपने रिश्तेदारों व मुलाक़ातियों वग़ैरह को

बाँटते हैं और वह लोग बड़े भाव से उसको खाते हैं। और जगन्नाथ में यह भी होता है कि जब जात्री लोग खा चुकते हैं और जो कुछ कि बच रहता है उसको लोग बड़े भाव और प्रीति से लूट ले जाते हैं और अपने रिश्तेदारों को तक़सीम करते हैं इस से साबित हुआ कि वे कुल की परशादी खाते हैं। तब ख़्याल करो कि गुरू और महातमाओँ की परशादी तो निहायत उत्तम और पाक है और वह अंतःकरन को शुद्ध करती है और गुरू की प्रीति बढ़ाती है। तो बमुक़ाबिले मूरत और आम लोगोँ के चेतन्य पुरुष और मालिक के प्यारे संतों और भक्तों की परशादी लेना तो ज़रूर बेहतर है और जोगियोँ में भी दस्तूर जारी है कि जब कोई गृहस्ती वग़ैरह उनका चेला होता है तब वह बड़े भाव और प्रीति से उनकी उच्छिष्ट खाता है, और वे जब शराब पीते हैं तो पीछे से उसी प्याले में से सेवक परशादी लेकर पीता है। और इसी तरह से शंका ढाल में भी सब मिलकर खाते हैं। और कुल जातोँ के लोग जो तमाशबीनी करते हैं वह दिन रात मुसलमानी ईसायन या कोई जात की स्त्री हो उसके यहाँ का खाना और पानी खाते पीते हैं और बल्कि उसको साथ बैठा करके

उसके साथ मिलकर खाते हैं और उसको शराब पिलाते हैं और उसी पियाले में बची हुई शराब को आप पीते हैं और उसके लब से अपना लब लगाते हैं। ऐसी ख़राब करतूतों पर भी कोई जात वाले उससे परहेज़ नहीं करते हैं और गुरू और संतों की परशादी को निन्दते हैं। बड़े अफ़सोस की बात है और आ-फ़रीं है ऐसी समझ पर कि गुरू और संत की क़दर कुछ न जानी और मुफ़्त में निंदक बनकर पाप कमाया। इसी तरह से बहुत से ऊँची जात वाले आदमी गोश्त और शराब और डबल रोटी वग़ैरह खाने के वास्ते डाकबँगला और होटलों में जाकर वह खाना कि जो मुसलमान बावरची ने तैयार किया है खाते हैं। बल्कि बाज़ी ऐसी चीज़ों को कि जो अंगरेज़ों के खाने की तश्तरी में साबित बच रहती हैं ख़ानसामाँ लोग इन साहबों की तश्तरी में रख देते हैं और उसको नई रोशनी वाले साहब खा जाते हैं और उनसे कोई एतराज़ नहीं करता और उनके साथ खाना और हुक्का पीना जारी रखते हैं, कि जिस में हर एक का लब लगता है। मालूम होवे कि वेद शास्त्र के हुक्म के मुवाफ़िक़ पिछले वक़्तों में लोग ब्रह्मचर्य्य धारन करते थे, और बराबर गुरू

के पास उनकी सेवा और टहल में रहते थे और जब वे खाना खा चुकते थे तब उसी बर्तन में कि जिस में गुरू साहब ने खाना खाया है जो कुछ उच्छिष्ट बचती थी वही खाना यानी परशादी लेते थे। कितने अफ़सोस और नादानी की बात है, कि वे लोग जो परशादी की निंदा करते हैं, वे रात दिन चूहों बिल्लियों कुत्तों मक्खियों चीटियों चिड़ियों कउओं मैनाओं तोतों वग़ैरह २ जानवरों की खाई हुई चीज़ों को खाते हैं, और गुरुभक्तों को दोष लगाते हैं, कितनी भारी ग़लती करते हैं, और पापी और दोषी होते हैं, बक़ौल तुलसीदास जी—

ऐसी चतुरता पै छार।
गुर प्रसाद में छूत लावत, करत लोकाचार।
नारि का मुख धाय चूमत, अधर लिपटी लार।
संत जन से द्रोह राखत, नात साढू सार।
तुलसी ऐसे पतित जन को, तजत न कीजे बार।

और दीगर सबूत परशादी की रसम का कि यह रसम हमेशे से जारी चली आती है यह है, कि ब्राह्मणों, खत्रियों और दीगर जातों में कि जिनके यहाँ यज्ञोपवीत की रसम है, चौदह ब्राह्मणों के लड़कों को न्यौता देते हैं, और यह लड़के बरुवे कहलाते हैं, और जब सब सामान पत्तल में परोस दिया जाता है, तब

जिस लड़के का कि जनेऊ हुआ है वह थाली लेकर उन बरुओं से उनकी उच्छिष्ट माँगता है और वे उसको पूरियों में से टुकड़े तोड़ कर और दूध में भिगोकर, जनेऊ वाले लड़के की थाली में डाल देते हैं। वे बरुवे गुरू नहीं हैं मगर गुरू के रिश्तेदार और जात के होते हैं। तब सोचो और बिचारो कि गुरू की परशादी लेना किस क़दर मुनासिब और फ़र्ज़ है। अब इस रसम परशादी को भरमियों और करमियों ने किस क़दर बदल दिया है कि वएवज़ इसके कि वे बरुओं को पेश्तर खाना खिलावें और बाद अज़ाँ उन से परशादी थाली में लेकर जनेऊ वाला खावे, उलटी रसम जारी करदी है, कि पेश्तर टुकड़े पूरी के माँग लेते हैं, उसकी वजह यह है कि जिनको लोग न्योता देकर खिलाते हैं, वे खुद भूले भटके और मालिक की इबादत और बंदगी से बेनसीब हैं, यानी अपने करम धरम से भूले हुए हैं, वे खुद गुरुवाई के लायक़ नहीं हैं, तो ऐसे ग़ाफ़िलों की जूठन कौन खावे।

आम तौर पर यह देखने में आया है कि अक्सर जानवरों या मनुष्यों में उनके लब में ख़ास असर है, जैसे कि मनुष्य अपने लब से फोड़े फुन्सी और दाद और

ज़ख़म वग़ैरह को अच्छा करलेते हैं और कुत्ता अपने लब से अपने ज़ख़म को चंगा करलेता है, और गाय भैंस वग़ैरह जानवर अपने बच्चों को चाट २ कर ताक़त देते हैं। फिर जब कि आम मनुष्यों और जानवरों के लब में इस क़दर असर अमृत का है, तो संत सतगुरु और साधगुरु और प्रेमी सतसंगी और अभ्यासियों के लब में जिनकी धारा अमृत के भंडार और ऊँचे मुक़ाम से आती है ज़रूर असर होना चाहिये। चूंकि हम देखते हैं कि बुख़ार और और बीमारियों का असर दूसरे लोगों को जो बीमार से मेल रखते हैं हो जाता है, तो संतों और भक्तों की ज़बान का असर कि जिनकी ज़बान पर सीतलता और अमीं का असर रहता है क्यों नहीं होगा, उनकी ज़बान का असर भी ज़रूर होगा।

दुनिया के लोग विचार को काम में नहीं लाते हैं वर्नः संत सतगुरु वग़ैरह की परशादी लेनेवालों पर तान न मारते। ग़ौर करके देखो तो वे लोग कितने जानवरों की परशादी रोज़मर्रे पा रहे हैं जैसे चिड़ियाँ मोरी में से कीड़े बीनती हुईं और खाती हुईं उसी चोंच से चौके में से रोटी का आटा नोंच २ कर ले जाती हैं, इसी तरह से चूहे बिल्ली

और कौवे वग़ैरह भी पानी को जूंठा करते हैं, और खाने की चीज़ों को तोड़ २ कर खाते हैं, और परशादी करके छोड़ जाते हैं। हलवाई की दूकान में बिल्ली व चूहे थोड़ा और बहुत मिठाई को जूंठा करदेते हैं। गड़ेरियाँ सिंघाड़े और तरकारी वग़ैरह कुंजड़े अपने पानी से तर करते हैं जो एक नदोले में भरा रहता है, और उसमें वे और उनके लड़के बाले हाथ धोते हैं और अक्सर उसी में से पानी लेकर पी लेते हैं और वह पानी इन सब चीज़ों पर छिड़का जाता है, शहद मक्खियों की परशादी है कि जिसको सब लोग खाते हैं। जो साहब कि परशादी की निंदा करते हैं उनसे पूछना चाहिये कि ज़रा ग़ौर करके जवाब दो कि कितने जानवरों का जूंठा आप खाते हैं, यहाँ तक कि गाय का गोबर और बछिया का पेशाब पीकर अपने तईं पवित्र समझते हैं, और संत सतगुरु और भक्तजनों से इस क़दर परहेज़ करते हैं और प्रेमी जीवों को कि जो अपने चेतन्य पुरुष गुरू की परशादी लेने से बड़भागता समझते हैं उनको निंदते हैं तो क्या मुंह लेकर तान मारते हो और मालिक के प्यारे भक्तजनों और साध संतो से अभाव रखते हो।

बड़े २ महात्मा जो पिछले वक्त में हुए, और जिन को कुल हिन्दू बड़ा मानते हैं, और पंडित और ब्राह्मण जिनकी मूर्ति की परशादी और चरनामृत लेते हैं और उनको अपना उद्धार और मोक्ष करता मानते हैं उनका हाल नीचे लिखा जाता है। वशिष्ठजी गनिका के पुत्र हुए, व्यासजी मछोदरी से पैदा हुए, नारद जी व सूत पुरानिक दासा सुत थे, रामचन्द्र जी ने भीलनी की परशादी खाई यानी जूंठे बेर खाये, और जिन पंडितों और भक्तों ने कि उसका नीची जात के सबब से निरादर किया था, उन्हीं से महाराज ने उसका आदर और भाव करवाया, और उसीके चरन ताल में धुलवाकर उसके जल को जो सड़ गया था शुद्ध करवाया। भक्त और प्रेमी मालिक के ऐसे प्यारे होते हैं, तो हम सब को उनके चरनों में प्रेम लाना चाहिये, और उनकी परशादी से अंतःकरन की शुद्धी समझनी चाहिये। सुपच भक्त को जो जात के भंगी थे कृष्णजी ने पांडवों के यज्ञ में युधिष्ठिर को भेजकर बुलवाया, और द्रोपदी के हाथ से भोजन करवाकर उनको खाना खिलाया, तब घंटा बजा और यज्ञ सुफल हुआ–

क़ौल

साहब के दरबार में केवल भक्ति पियार ॥
केवल भक्ति पियार गुरू भक्ती से राज़ी ।
तजा सकल पकवान खाया दासी सुत भाजी ॥
राजा युधिष्टिर यज्ञ बटोरा जोरा सकल समाजा ।
मरदा सब का मान सुपच बिन घंट न बाजा ॥
पलटू ऊँची जात का नति कोइ करो अहंकार ।
साहब के दरबार में केवल भक्ति पियार ॥

कृष्णचन्द्रजी ने अहीर के घर में परवरिश पाई और रामचन्द्रजी क्षत्री थे उनकी मूर्ति की पूजा की जाती है और चरनामृत व परशादी सब मन्दिरों में तक़सीम होती है, ब्राह्मण और कुल जातवाले लेते हैं, और उनका इष्ट बाँधकर उनका सुमिरन और ध्यान करते हैं, और उससे अपनी नजात मानते हैं—

झूलना

ब्रह्मा औलाद कँवल सेती । दादुर से माड़ा माड़िया जी ॥
संगीऋषि को तो मृगनी जना । किरनी से ब्यास को जानिया जी ॥
बालमीक की आदि बाँबी से है । शंकर पिता को मानिया जी ॥
कबीर इतने आचारजों में । कहो ब्राह्मन कौन बखानिया जी ॥

॥ दोहा ॥

कोटि २ एकादशी परशादी का अंस ।
जिनके यह परतीत है ते शिष हैं हरिबंस ॥

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

बचन जोकि स्वामी जी महाराज ने आख़िर रोज़ पेश्तर अन्तर-ध्यान होने के, वास्ते हिदायत साधुओं व सतसंगियों व सतसंगिनों के ख़ास ज़बान मुबारक से फ़रमाये–तारीख़ १५ जून सन् १८७८ ई० मुताबिक़ असाढ़ वदी १ पड़वा सम्वत १९३५ रोज़ शनिश्चर वक्त अलस्सुबह।

॥ बचन १ ॥

चंद्रसैन सतसंगी जोकि हर पूनें को मौज़े कुरसंडे से वास्ते दर्शन हुज़ूर स्वामीजी महाराज के आता था उसको स्वामीजी महाराज ने पास बुलाकर फ़रमाया कि तुम बैठ जाओ और दर्शन खूब ग़ौर से करलो और इस सरूप को अपने हिरदे में रखलो क्योंकि दूसरी पूनों को तुमको दर्शन न होंगे तुम्हारी भक्ती पूरन हुई ॥

॥ बचन २ ॥

वक्त ८ बजे सुबह के स्वामीजी महाराज ने फ़रमाया कि अब चलने की तैयारी है इसके बाद महाराज ने सुरत चढ़ाई और सब भास खैंच लिया सिर्फ़ सफ़ेद ढेले आँखों के नज़र पड़ते थे और

बदन काँपने लगा और नाखून हाथों व पैरों के पीले हो गये थे फिर पाव घंटे के बाद सुरत उतारी और उस वक़्त यह फ़रमाया कि अब मौज फिर गई अभी देर है तब लाला परतापसिंह ने पूछा कि कब की मौज है उस पर फ़रमाया कि बाद दोपहर के।

॥ बचन ३ ॥

फिर भारासिंह साधू और सतसंगियों ने कुछ रुपया भेंट करना शुरू किया और बंदगी करने लगे उस पर लाला जगन्नाथ खत्री पड़ोसी कहने लगे कि इस वक़्त महाराज को ध्यान अंतर में लगाने दो रुपया पेश करने का यह वक़्त नहीं है तब स्वामी जी महाराज ने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर यह फ़रमाया कि ध्यान इसका नाम है कि जब चाही तब सुरत पहुंचादी और जब चाही तब उतारली और हमने तो डेरे रातको ही पहुंचा दिये और सुरत सत्तपुरुष की गोद में पहुंचादी मगर तुम लोगों से कुछ बचन कहने को उतर आये हैं।

॥ बचन ४ ॥

फिर यह फ़रमाया कि तुम जानते हो कि मेरी छ बरस की उमर थी जब से मैं परमार्थ में लगाहूं तब यह अभ्यास पक्का हुआ है और यह दृष्टान्त

फ़रमाया कि कच्चा पैराक हो उसके डूबते वक़्त कहो कि अब तू पैर तो उस वक़्त वह क्या पैरेगा वह तो डूबेहीगा और जो लड़कपन से पैरना सीख रहा है उसको दरिया में डाल दोगे तो वह नहीं डूबेगा और यह देह तो खलड़ी है यह तो किसी की भी नहीं रही है इसका क्या है और ज़िंदगी भर का भजन सुमिरन सिर्फ़ इसी वास्ते है कि इस वक़्त न भूले इस वास्ते ऐसा नाम का अभ्यास करो कि चलते फिरते नाम न भूले।

॥ वचन ५ ॥

फिर स्वामीजी महाराज ने राय शालिगराम और कुल साधुओं व सतसंगियों व सतसंगिनों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि जैसा मुझको समझते हो वैसा ही अब राधाजी को समझना और राधाजी और छोटी माताजी को बराबर जानना।

॥ वचन ६ ॥

फिर राधाजी महाराज को हुकम दिया कि शिब्बो और बुक्की और बिशनो को पीठ न देना।

॥ वचन ७ ॥

सनमुखदास को फ़रमाया कि इसको सब साधों का महन्त किया और यह फ़रमाया कि ऐसी महंती नहीं कि जैसी दुनिया में जारी है यानी सनमुखदास

और बिमलदास साधों के अफ़सर हुए और इंति-ज़ाम और बंदोबस्त साधों का इनके तअल्लुक़ रहेगा और बाग़ में ठहरें और बाग़ का मालिक परतापा।

॥ बचन ८ ॥

फिर फ़रमाया कि गृहस्थी अपनी पूजा साधों से न करावें।

॥ बचन ९ ॥

फिर रद्दो बीबी ने पूछा कि हमारे वास्ते किस को तजवीज़ किया है इस पर फ़रमाया कि गृह-स्थियों के वास्ते ता राधाजी और साधों के वास्ते सनमुखदास।

॥ बचन १० ॥

स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि गृहस्थी औरतें बाग़ में जाकर किसी साधू की पूजा और सेवा न करें इन सब को चाहिये कि राधाजी के दर्शन और पूजा करें। फिर फ़रमाया कि शेर और बकरी को एक घाट पानी मैं ने पिलाया है और किसी का काम नहीं है कि ऐसा करे।

॥ बचन ११ ॥

फिर बीबी बुक्की ने अर्ज़ की कि स्वामी जी मुझ को भी अपने साथ ले चलो, इस पर फ़रमाया कि

तुम घबराओ मत तुम को जल्दी बुलालेंगे तुम अंतर में चरनों की तरफ़ ज़ोर देना।

॥ वचन १२ ॥

फिर लाला परतापसिंह ने अर्ज़ किया कि मुझ को भी अपने संग ले चलो इस पर फ़रमाया कि तुम से अभी बहुत काम लेना है बाग़ में रहोगे और सतसंग करोगे और कराओगे।

॥ वचन १३ ॥

फिर सुदर्शनसिंह ने पूछा कि जो कुछ पूछना होवे तो किस से पूछैं उस पर फ़रमाया कि जिस किसी को पूछना होवे वह शालिगराम से पूछे।

॥ वचन १४ ॥

फिर लाला परताप सिंह की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि मेरा मत तो सत्तनाम और अनामी का था और राधास्वामी मत शालिगराम का चलाया हुआ है इसको भी चलने देना और सतसंग जारी रहे और सतसंग आगे से बढ़कर होगा।

॥ वचन १५ ॥

फिर फ़रमाया कि सब सतसंगी ख़्वाह गृहस्ती या भेष किसी तरह न घबरावें मैं हर एक के अंग संग हूं और आगे को सब की सम्हाल पहिले से विशेष रहेगी।

॥ बचन १६ ॥

फिर फ़रमाया कि कलजुग में और कोई करनी नहीं बनेगी केवल सतगुर के स्वरूप का ध्यान और नाम का सुमिरन और ध्यान नाम का बनेगा॥

॥ बचन १७ ॥

लाला परतापसिंह ने अर्ज़ किया कि शब्द खुले इस पर फ़रमाया कि धुन का सुनाई देना और उसमें आनन्द का प्राप्त होना यही शब्द का खुलना है।

॥ बचन १८ ॥

फिर स्वामीजी महाराज ने राधाजी की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि मैंने स्वार्थ और परमार्थ दोनों में क़दम रक्खा है यानी दोनों बरते हैं सो संसारी चाल भी सब करना और साधों को भी अपनी रीति करने देना।

॥ बचन १९ ॥

फिर स्वामीजी महाराज सहन में से भीतर कमरे के तशरीफ़ ले गये और क़रीब पौने दो बजे बाद दोपहर के अंतरध्यान हुए॥

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

ज़िकर है कि एक सिख चौबीस नम्बर पलटन का कि जिसने स्वामी जी महाराज से उपदेश लिया था और सरधा भी राधास्वामी दयाल में किसी क़दर आगई थी और माँस खाना और शराब पीना भी उस ने छोड़ दिया था मगर निन्दकों के बहकाने से वह फिर राधास्वामी दयाल की तरफ़ से बे पर-वाह होगया था और माँस शराब फिर खाने लगा था और सुरत शब्द अभ्यास की जुगती भी भूल गया था और अभ्यास करना छोड़ दिया था। कुछ अर्से बाद ऐसी मौज़ हुई कि वह शख़्स शिद्दत से बीमार होगया और बहुत तकलीफ़ होने लगी तब उसकी तवज्जह फिर राधास्वामी दयाल के चरनों की तरफ़ हुई और बड़ी दीनता से प्रार्थना करता रहा, तब स्वामी जी महाराज ने उसको ख़्वाब में दरशन दिये, और फ़रमाया कि अब यह शरीर तुम्हारा नहीं रहेगा चार रोज़ बाद फ़लाने वक्त़ छूट जायगा, तो जब उसको होश आया तब उसने

अपने मुलाक़ाती सतसंगियों को कि जो उस पलटन में मौजूद थे उनको बुलवाया और बहुत दीनता से उन सतसंगियों से पेश आया और हाल ऊपर का लिखा हुआ बयान किया, और अरज़ की कि तुम मेरे ऊपर ऐसी दया करो कि जो भेद राधास्वामी महाराज ने बख़्शा था वह मैं भूल गया हूं सो मुझको अच्छी तरह से समझाकर बतला दीजिये तब एक सतसंगी ने कुल भेद अभ्यास का बतला दिया, और जो कुछ कि उपदेश के साथ समझाना बुझाना था वह उससे कह दिया तब उसको पूरी प्रीत और प्रतीत महाराज के चरनों में बख़ूबी होगई और संसार की तरफ़ से उस वक़्त बिलकुल वैराग होगया और उसी वक़्त से राधास्वामी नाम सुमिरन और ध्यान करना शुरू कर दिया और उस वक़्त से उसकी सुरत महाराज के चरनों में ऐसी लगी रही कि उसके चेहरे से ज़ाहिर होता था कि उसको देह छोड़ने का कुछ रंज नहीं है और जब वह दिन और वह वक़्त आया तब उसने देह छोड़ दी।

वाज़ह होकि जब स्वामी जी महाराज के चरनों में हुज़ूर साहब आये थे तो उन के हिरदे में हर वक़्त यही उमंग उठती थी कि राधास्वामी मत ख़ूब

ज़ोर शोर से प्रघट होवे कि जिस से मैं इसका आनंद लूं और देखूं कि जीवों का खूब उद्धार होता जाता है। स्वामी जी महाराज यह सुन करके ख़ामोश हो रहे थे मगर हुज़ूर साहिब अकसर यही अर्ज़ किया करते थे कि या तो राधास्वामी मत खूब प्रघट होवे या इस अमर की मेरे दिल से ख़्वाहिस दूर हो जावे, आगे मौज आप की है जो चाहे सो करिये तब एक मरतबे स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया था कि यह मत खूब प्रघट होगा और शब्द का रस भी अकसर मिलता रहेगा और शब्द मुफ़स्सिलै ज़ैल इसी दरख़्वास्त पर फ़रमाया है--

॥ शब्द ॥

सतगुरु से करूँ पुकारी। संतन मत कीजे जारी ॥ १ ॥
जीवों का होय उद्धारी। मैं देखूं यही बहारी ॥ २ ॥
मैं मौज करूँ फिर भारी। सब आरत करें तुम्हारी ॥ ३ ॥
मैं हरखूं खेल निहारी। मानो यह अरज़ हमारी ॥ ४ ॥
मैं राखूं पक्ष तुम्हारी। अब कीजे दया विचारी ॥ ५ ॥
मैं बालक सरन अधारी। मैं करूँ बीनती भारी ॥ ६ ॥
जो मौज न हो यह न्यारी। तो फेरो सुरत हमारी ॥ ७ ॥
घट भीतर होय क़रारी। शब्दा रस करे अहारी ॥ ८ ॥
दोउ में से एक सुधारी। जो दोनों करो दया री ॥ ९ ॥
मैं राज़ी रज़ा तुम्हारी। मैं राधास्वामी गोद पड़ा री ॥१०॥

एक मरतबे का ज़िक्र है कि जब महाराज तीर्थ बरतों और करमों भरमों का खंडन किया करते थे तो फ़रमाते थे कि यह न समझना कि इस जगह पर तीर्थों बरतों व करमों भरमों का खंडन होता है, यह खंडन कुल देशों में आप से आप हो जायगा और सब लोग होशियार होकर आप अपने मत को खूब विचार लेंगे और उन्हीं में से छट करके जो कोई सतोगुनी होंगे राधास्वामी मत में दाख़िल होते जावेंगे और कुल इस रचना का एक एक दरजा बढ़ा दिया गया है और इस पर यह शब्द भी फ़रमाया है--

॥ शब्द ॥

सुरत ने शब्द गहा निज सार। आज घट कुल का हुआ उद्धार ॥ १ ॥
नाम का पाया रंग अपार। जीव ने धरा हंस अवतार ॥ २ ॥
दूध और पानी कीन्हा न्यार। दूध फिर पीया तन मन वार ॥ ३ ॥
छोड़िया पानी बिपत बिडार। नित्त मैं पीती रहूं सुधार ॥ ४ ॥
काल को डारा बहुत लताड़। चरन गुरु पकड़े आज सम्हार ॥ ५ ॥
नाम सँग हो गई सूरत सार। मानसर न्हाई मैल उतार ॥ ६ ॥
चुगूं मैं मोती शब्द बिचार। गुरू ने खोला घाट दुआर ॥ ७ ॥
धुनन को छाँट लिया मन मार। घाट घट भीतर पड़ी पुकार ॥ ८ ॥
नाम गुरु लीन्हा मोहिं निकार। छोड़िया सारा जगत बिसार ॥ ९ ॥
किया अब राधास्वामी जगत उद्धार। जीऊँ मैं राधास्वामी चरन पखार ॥ १०

॥ शब्द ॥

गुरु प्यारे करें आज जगत उद्धार ॥ टेक ॥

जीवन को अति दुखी देखकर । उमँगी दया जाका वार न पार ॥ १ ॥
नर सरूप धर जग में आये । भेद सुनाया घर का सार ॥ २ ॥
दीन होय जो चरनन लागे । उन जीवन को लिया सम्हार ॥ ३ ॥
बाक़ी जीव जन्तु पर जग में । मेहर दृष्टि करी गुरू दयार ॥ ४ ॥
जस तस उनका काज बनाया । अपनी दया से किरपा धार ॥ ५ ॥
कोई जीव ख़ाली नहिं छोड़ा । सब पर मेहर की दृष्टी डार ॥ ६ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे । जीव जन्तु सब लीन्हे तार ॥ ७ ॥
कौन सके उन महिमा गाई । शेष महेश रहे सब हार ॥ ८ ॥
दोउ कर जोर करूं मैं बिनती । शुकर करूँ मैं बारम्बार ॥ ९ ॥
राधास्वामी सम समरथ नहिं कोई । राधास्वामी करें अस दया अपार ॥१०॥
मैं बालक उन सरन अधीना । चरन लगाया मोहिं कर प्यार ॥ ११ ॥
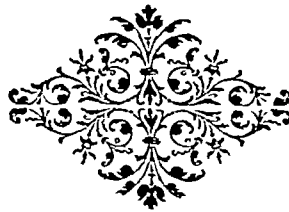
फ़िहरिस्त राधास्वामी मत के पुस्तकों की।

॥ नागरी ॥

	क़ीमत
सार बचन छन्दबन्द (हुजूर महाराज के पाठ की पुस्तक से शुद्ध करके नया छपा है। ...	३)
सार बचन वार्तिक ..	१॥)
प्रेमबानी पहिला भाग ...	२)
प्रेमबानी दूसरा ,, ...	२)
प्रेमबानी तीसरा ,, ...	२)
प्रेमबानी चौथा ,, ...	।॥)
प्रेमपत्र पहिला भाग ...	३)
प्रेमपत्र दूसरा ,, ...	३)
प्रेमपत्र तीसरा ,, ...	३)
प्रेमपत्र चौथा ,, ...	३)
प्रेमपत्र पांचवां ,, ...	३)
प्रेमपत्र छठा ,, ...	२)
सार उपदेश ...	॥)
निज उपदेश ...	॥)
प्रेम उपदेश ...	॥)
राधास्वामी मत संदेश ...	॥)

	क़ीमत
राधास्वामी मत उपदेश ...	≈)
गुरु उपदेश ..	।-)
प्रश्नोत्तर संत मत ...	।≈)
बचन महात्माओं के ...	।)
जुगत प्रकाश ...	।॥)
संत संग्रह भाग पहिला ...	॥)
संत संग्रह भाग दूसरा ...	॥)
राधास्वामी मत प्रकाश अंग्रेज़ी	॥≈)
नाम माला ..	।)
बिनती व प्रार्थना ..	।)
प्रेम प्रकाश	॥)
भेदबानी पहिला भाग ..	।-)
भेदबानी दूसरा ,,	।)
भेदबानी तीसरा ,,	।)॥
भेदबानी चौथा ,, ..	।-)
जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज	॥)

॥ उर्दू ॥

सारबचन वार्तिक ...	१)
सार उपदेश ..	॥)
निज उपदेश ...	॥)
राधास्वामी मत संदेश	॥)
कैटिकिज़म यानी सवाल व जवाब	।≈)
सहज उपदेस ...	।≈)

॥ बंगला ॥

सार उपदेश ...	॥)
राधास्वामी मत संदेश ...	॥)

॥ नई पुस्तकें ॥

महाराज सा० के बचन पहिला भाग	॥)
,, ,, दूसरा ,,	॥)
,, ,, तीसरा ,,	॥)
बोलेस (अंग्रेज़ी) ...	॥)
"स्वरूप व शब्द" महाराज साहब 'छोटा' ...	≈)
,, 'बड़ा' ...	≡)